nbt.india

एकः सूते सकलम्

nbt.india

एकः सूते सकलम्

नेहरू बाल पुस्तकालय

nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

12 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से [illegible] 195[illegible] [illegible] (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास [illegible] अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भा[illegible] [illegible]। बच्चों की पुस्तकों का प्रक[illegible] [illegible] है।

ISB[illegible] 978-8[illegible]23[illegible]9103-6

[illegible] : 20[illegible] (शक 1941)

Desk Par Likhe Naam (*Hindi Original*)

₹ 80.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-2
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित

www.nbtindia.gov.in

वि[illegible] सूची

1. [illegible]फूल [illegible] 1

2. [illegible]ाब [illegible] 11

3. पु[illegible] 19

4. [illegible] शीतल 26

5. [illegible] 32

6. अपरा[illegible] 36

7. कबूतरों वाली कॉ[illegible] 41

8. [illegible]ोल गोल [illegible] [illegible]6

9. [illegible]ह खू[illegible]ूरत रिश्ते का पुल [illegible]0

10. नए टीचर 56

11. नन्हे आर्टिस्ट [illegible]1

12. छुक-छुक गाड़ी का इंजन 64

13. केनपहाड़ी 73

14. जंगल जलेबी 78

15. सिद्धू-कान्हू का देस 83

16. नानी की नीलू 88

17. दूध के 92

18. 97

19. प्ला 103

मिश 114

लोग 126

र्जों की मद 130

23. 135

24. डेस्क 142

nbt.india

एकः सूते सकलम्

nbt.india

एकः सूते सकलम्

स्कू[illegible] औ[illegible]ास्[illegible]

न[illegible] कभी [illegible]ामि[illegible]ी स[illegible], कल[illegible]हती है। स[illegible]छुआ चुप[illegible] पड़ा था।[illegible] पहाड़ियाँ नींद [illegible]ों के क[illegible]। खिलने को उत्सुक [illegible] स्ले[illegible]...

"ओह! [illegible]"

तभी ठंडी हवा क[illegible]ड़त[illegible]रिया आई। उस[illegible]पनी चोंच से प[illegible]ड़ियों के पी[illegible] छिपे सूरज को खींचकर आसमान में टाँग[illegible]या। फिर वह [illegible]ड़कर [illegible]ाश[illegible] की ऊँची फुन[illegible] पर [illegible]ब[illegible]। "[illegible]ई...[illegible]ह हो [illegible]।" [illegible]सने [illegible]हचहा[illegible] सब[illegible] बता[illegible]। धी[illegible] धी[illegible] आसम[illegible] के [illegible]ह स्लेटी रंग में गाढ़ा सिंदूरी रंग घुलने लगा। पहाड़ी ने आँखें मिचमिचाते हुए सूरज को देखा। [illegible] धोया सूरज [illegible] था। [illegible] ने [illegible] आँख खोलकर सूरज को निहारा और अलसाते हुए वापस अपने खोल में दुबक गया।

पुल पर आवाजाही शुरू हो गई थी।

सपनों में खोया कारखाना अभी तक ऊँघ रहा था। अचानक पावर हाउस के हूटर ने जोर की सीटी बजाई...

"व्हूँ.......ऊँ....ऊँ।

कारखाना हड़बड़ाकर [illegible] नाइट शिफ्ट में काम करने वाले कर्मचारी एक-ए[illegible] र

उनींदी [illegible] टी [illegible] । कमरे में सुबह की [illegible] कोने में भूरी बि[illegible] कोली [illegible] स [illegible] ी को देखे ज[illegible] था। [illegible] सी [illegible] कुछ [illegible] रही। [illegible] र आँखें [illegible] बिस्[illegible] ी। [illegible] उ[illegible] फिर पूँछ [illegible] ी हु[illegible] ी ने [illegible] । फर्श [illegible] डा था। तभी ठंडा [illegible] उ[illegible] चे[illegible] र [illegible] ने लगे [illegible] की सुबह ठं[illegible] है।

[illegible] पीले [illegible] टन-टन-टन की आ[illegible] की [illegible] वाले ने दूध के बड़े-बड़े केन [illegible] से [illegible] इकिल हिलती-डुलती चल रही थी जिसक[illegible] के [illegible] र उसके हैंडिल से टकराकर आव[illegible] कर रहे थे...टन-टन-टन। तभी उसने बासंती को देख[illegible] जो धीमे-धीमे [illegible] ी ह[illegible] र्टर की [illegible] ढ़ियाँ [illegible] थी। [illegible] हाँ घर [illegible] साफ[illegible] में मदद करत[illegible] है। [illegible] टी [illegible] ध्या[illegible] अभी [illegible] खिड़क[illegible] से बाहर सुबह की हलचल निहारने में लगा था। बासंती हाथ में झाड़ू लिए पुट्टी के कमरे में आ गई।

"अरे पुट्टी बिटिया...बड़ी जल्दी उठ गई!" बासंती खिड़की के पास चली आई थी।

"मैं तो रोज ही जल्दी उठती हूँ। ये तो टुटु जल्दी नहीं उठता न।" आँखें मटकाते हुए पुट्टी ने बिस्तर पर सोए टुटु की ओर इशारा किया, जो अभी तक नींद की आगोश में था।

"सही कहती हो पुट्टी", बासंती ने मुस्कराते हुए पुट्टी के गाल सहला दिए। पुट्टी चुपचाप उसे देखती रही। बासंती झाड़ू लेकर कमरे की सफाई में लग गई [illegible]

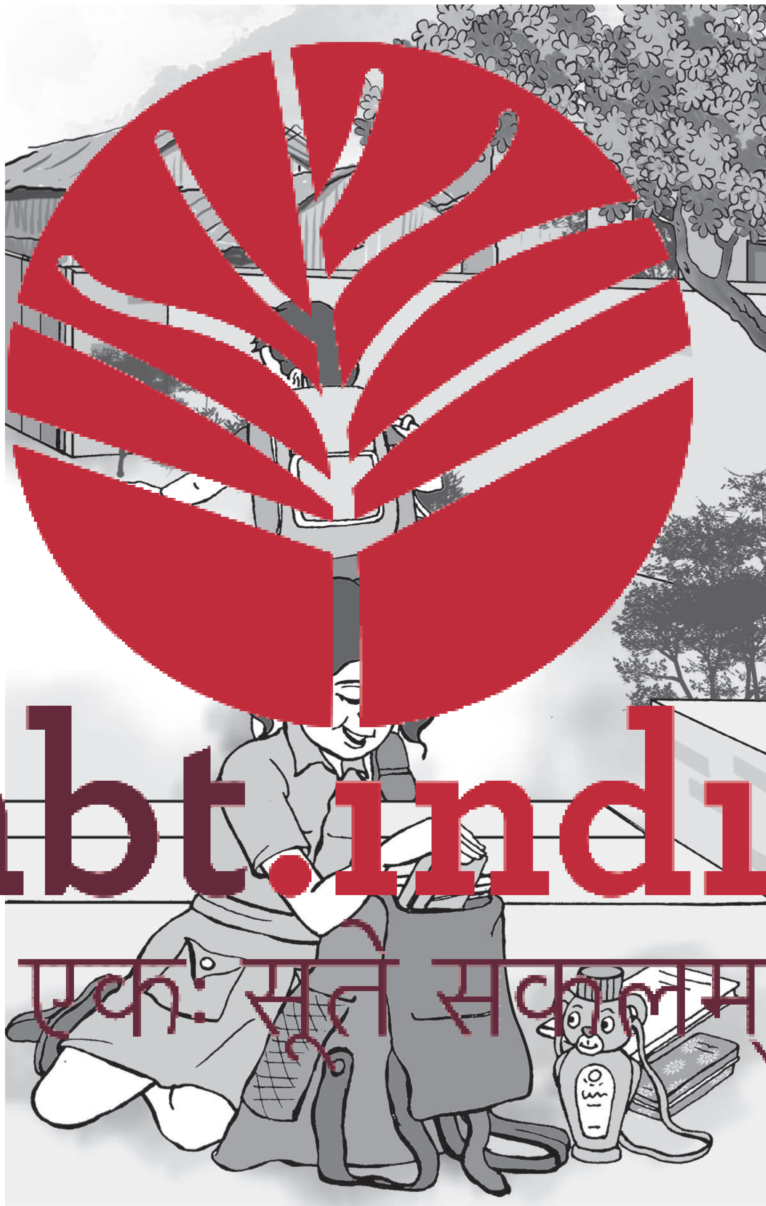
थोड़ी [illegible] आ [illegible] आए। ड्राइंग रूम में वे [illegible] कर मम्मी ने टुटु [illegible]

[illegible] ड़ा-बा [illegible] कूल [illegible] के.जी. 2 [illegible] ना [illegible] साल [illegible] वह पुट्टी [illegible] किशे [illegible] पुट्टी उसके साथ [illegible] का [illegible] ली कक्षा में [illegible] की उम्र [illegible] पास ही है। [illegible] हुई [illegible] की तैयारी करने [illegible] उन्होंने पापा को फोन करके [illegible] मिलना चाहिए। बच्चे फूल जैसे होते [illegible] उन्हें स्कूल के अनुशासन में बाँधना ठीक नहीं। तब से बच्चों को घर पर ही सीखने-सिखाने की जिम्मेदारी मम्मी [illegible] तरह दोनों [illegible] स्कू [illegible] से जु [illegible]।

पुट्टी [illegible] अपना नया स्कूल [illegible] निफॉर्म बहुत पसंद आया। [illegible] दरअसल एक शानदार फ्रॉक है। नेवी ब्लू रंग का फ्रॉक में सामने चार जेब हैं। दो ऊपर, दो नीचे फ्रॉक की घेर पर हैं। पुट्टी ने सोचा—"इन जेबों में तो कितना कुछ छिपाया जा सकता है...इमली के बीज, गोल काले सफेद चिकने पत्थर, पर, कंचे और मम्मी के टूटे हुए आर्टिफिशियल ज्वेलरी की लड़ियाँ।"

बाहर टुटु का रिक्शा हॉर्न बजाने लगा था...पों...पों...पों...

टुटु अपना बैग और वाटर बॉटल सँभालता गेट की तरफ दौड़ गया। टुटु के जाने के बाद पुट्टी ने अपना टिफिन बैग में रखा। छुट्टियों में



पापा बच्चों के लिए नए बैग और बॉटल खरीद लाए थे। भालू जैसा दिखने वाला नीला वाटर बॉटल बहुत सुंदर है। कंधे पर बैग और गले में वाटर बॉटल लटकाकर [illegible] स्कूल बैज उसकी बायीं कॉलर के [illegible] बैज। गोल बैज के ठीक [illegible] को बताया था कि [illegible] सामाजिक [illegible] निकल [illegible] बच्चों [illegible] समझा रहे थे। आखिरकार [illegible] स्कूल [illegible]। उन्होंने पु[illegible] पर पाकड़ का [illegible] राहे से बायीं ओर कु[illegible] फतेहपुर कॉलोनी का बाजार [illegible] कदम के बाद ही पुट्टी का स्कूल है। [illegible] पीली दीवार से घिरा है। कैंपस में प्रवेश करते ही गेट के पास बरगद का विशाल पेड़ है। उसकी मोटी [illegible] तक लटक[illegible] हुई [illegible] बच्चे [illegible] को पकड़े झूल रहे थे। [illegible] शाखाओं से [illegible] चहकती चिड़ियों का कलरव मानो वहाँ खेलते-कूदते मगन बच्चों की हँसी के साथ जुगलबंदी कर रहा हो। तभी पुट्टी की नजर बरगद की जड़ों में फँसे सुआपंखी रंग के पंख पर पड़ी। उसने यह पंख उठा लिया— "यह तो तोते का पंख है।" पुट्टी ने सोचा और धीरे से निचली जेब में रख लिया।

कैंपस में दो इमारतें बिलकुल पास-पास हैं। एक 'कस्तूरबा गांधी विद्यालय' और दूसरी इमारत 'अरविंदो इंस्टीट्यूट' जिसे सब 'कम्युनिटी हॉल' भी कहते हैं। इसके साथ लगा एक विशाल मैदान है। मैदान के

बीचों-बीच पुट्टी का स्कूल है... देशबंधु बुनियादी विद्यालय, (फतेहपुर) चि.रे.कॉ.।

स्कूल देख[illegible] हो गई। यहाँ बहुत बड़ा मैदान है। [illegible] रखाने का कैंपस है, ज[illegible] पर छोटे-से हॉ[illegible] प्याऊ पर हो[illegible] की जाली [illegible] है। [illegible] कमरे बने [illegible] ऑफि[illegible] होती हैं। पापा उस [illegible] में। [illegible] कक्षा में [illegible] सारे नए ब[illegible] रहे हैं। कु[illegible] खुश [illegible] बॉटल और पेंसि[illegible] रहे [illegible] निकालकर खाना [illegible] रोए जाते थे। शायद वे प[illegible] रहे थे कि उनके मम्मी-पापा उन्हें अ[illegible]। उनकी चीखें उस छोटे-से स्कूल के गलियारे में गूँज रही थीं। टीचर उन्हें टॉफी-चॉकलेट [illegible] बहलाने की [illegible] थीं। फिर [illegible] वे [illegible]। [illegible] बैठे [illegible] ने [illegible] रोते [illegible] देखकर रोन[illegible] दिय[illegible] पु[illegible] रो [illegible] नहीं [illegible], पर हैरान-परेशान जरूर थी। उसने बेचैनी से पूरी क्लास को देखा। उसे कुछ भी समझ में नहीं आया तो अपनी सुंदर बॉटल निकालकर पानी पीने लगी। टीचर बच्चों को [illegible] के लिए [illegible] व अन्य गतिविधियों में व्यस्त करने की कोशिश कर रही थीं। धीरे-धीरे शोर थमने लगा। बच्चे कक्षा में रमने लगे थे। कभी-कभी कोई धीमी सुबकी सुनाई पड़ जाती थी। तभी उस गोलू-मोलू प्यारे-से बच्चे पर पुट्टी की नजर पड़ी। पुट्टी ने उसे उसके भाई के साथ आते देखा था। वह बच्चे

को मैडम का हाथ पकड़ाकर चला गया। खिड़की के पास बैठा वह बच्चा बार-बार दरवाजे की ओर देख रहा था। वह जोरों से रो तो नहीं रहा, मगर उसकी आँखें गी[illegible] देखकर लगता था मानो आँसू अभी [illegible] विश्वास नहीं हो रहा था कि [illegible] ख्याल रखता है, उसे [illegible]।

[illegible] अधिक है। [illegible] में अपना [illegible] गाल टिकाए बैठा था। उसक[illegible] हिल [illegible] ने पुट्टी क[illegible] मुस्कराई [illegible] और बॉटल डेस्क[illegible] खूबसूरत नीला बॉटल [illegible] सूरज की एक किरण डेस्क [illegible] कर वह पंख डेस्क पर रख दिया। धूप [illegible] बच्चे ने अपनी उँगलियों से पंख को छूते हुए पूछा—

"[illegible] तु[illegible] कहाँ से [illegible]।"

"आज स्कूल आते समय... [illegible]ते में"

"तोते ने दिया...!"

"नहीं...पेड़ के नीचे गिरा मिला।"

बच्चा चुप रहा, पुट्टी बोल उठी—

"तोता पंख क्यों देता है? जानते हो?"

बच्चे ने 'नहीं' में सिर हिलाया।

"उसे नई ड्रेस मिल जाती है, तो पुरानी हम बच्चों को दे देता है।" पुट्टी ने पंख को धूप में उलटते-पलटते हुए कहा।

“ये किसने बताया तुम्हें?”

पापा ने।

“ओ...” [illegible]

अब [illegible] मुट्ठी डेस्क के बीचों-[illegible] पत्थर चमक रहे [illegible]र्य-भाव से [illegible] रंग-बिरंगे [illegible] गोल घेरा [illegible] दिया।

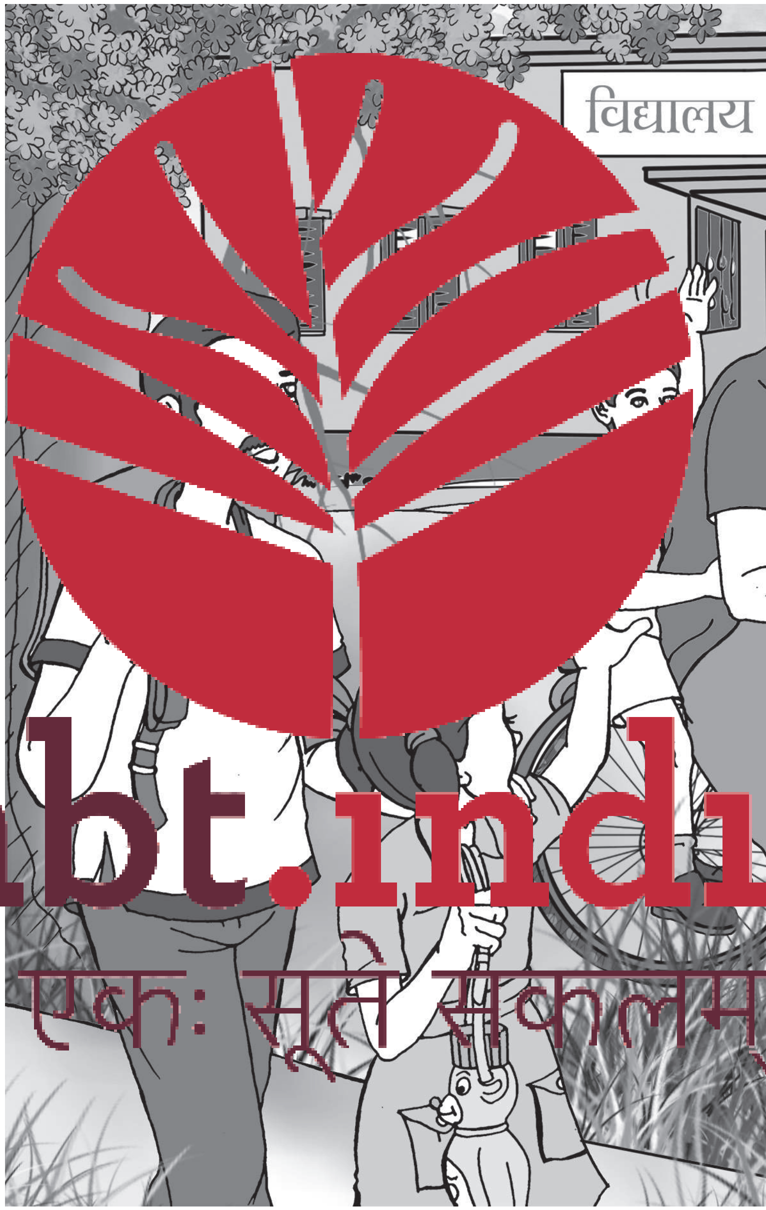
[illegible]” कह[illegible] पुट्टी [illegible] मुस्करा उठी।

[illegible] पर [illegible] घेरे और उस[illegible] था। उसका सुबकना [illegible]

दोनों [illegible] सौरभ मरांडी है। वह नदी पार के ‘फुटबाड़[illegible] सौरभ ने पुट्टी को बताया कि उसका भाई उसे शहर घुमाने को कहकर लाया था, पर स्कूल में छोड़ गया। शाय[illegible] हो। काम [illegible] घुमा[illegible]। खिड़की के [illegible] स्कूल का खुला मैदान [illegible] था [illegible] कैंपस [illegible] उस पार कारखाने की बाउंड्री है। वहाँ चिलबिल के कई पेड़ हैं, जिनकी शाखाएँ स्कूल कैंपस में झुकी हैं। हवा में सूखे पत्ते उड़ रहे हैं। थोड़ी दूर पर रेसकोर्स भी दिख रहा है। वे दोनों खिड़की से बाहर देखते [illegible] बातें करते-खिलखिलाते रहे। छुट्टी की घंटी लगने पर पुट्टी ने सौरभ की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा—

“अब हम दोस्त हैं...हैं न!”

“दोस्त...कैसे?”


विद्यालय

“अब हम रोज इसी डेस्क पर साथ बैठेंगे।”

सौरभ ने मुस्कराते हुए अपना हाथ बढ़ा दिया। कंधे पर बैग टाँगे पुट्टी कक्षा से [illegible] पापा उसे लेने आए थे। “स्कूल का [illegible] ?” [illegible] पापा को हर एक बात [illegible]। उसने [illegible] को [illegible] साइकिल पर बैठ[illegible]। [illegible] खुश था। [illegible] देखकर [illegible] मुस्कराते हुए ह[illegible] हिलाया। [illegible] भी [illegible] से [illegible] और तब तक [illegible] हिलाता [illegible] तक [illegible] से [illegible] हो गई। [illegible] सार [illegible] के थकन [illegible] जब तारे टिमटिमा रहे थे तब [illegible] टुकड़ों [illegible] एक सुंदर पं[illegible] मुस्कराता [illegible]

[illegible]

आज रविवार [illegible] के [illegible] ए स्व[illegible] एक [illegible] गया है। स्कू[illegible] धीरे-धीर[illegible] नी [illegible] रही है [illegible] शहर में बरस[illegible] बारि[illegible], लेकिन टुटु का रिक[illegible] पढ़[illegible] बता रहे थे कि मानसून हमारे [illegible] का [illegible] ब बारिश लाने वाली हवाओं का मौसम' ऐसा [illegible] ने [illegible] टुटु-पुट्टी को बताया था।

सुबह जब पुट्टी सोकर उठी तो टुटु बेड पर नहीं था। वह उठकर सीधे ड्राइंग रूम [illegible] चली आई। बासंती [illegible] र पोंछा लगा रही थी। खिड़की के पास [illegible] चीनी शैली [illegible] सोफे पर पुट्टी [illegible] गई। बाहर [illegible] भी तेज बारिश हो रही थी। बासंती ने बताया कि रातभर बारिश होती रही है। सुबह बड़ी मुश्किल से वह काम पर आ पाई है। पुट्टी ने पर्दा हटाकर देखा। मूसलाधार बारिश से बागान में बुलबुले बन रहे थे। बासंती ने बताया कि जब ऐसे बुलबुले बनते हों तो इसका मतलब है कि और बारिश होगी। घर के बरामदे की रेलिंग से पानी टप-टप करके टपक रहा था। बरामदे में ही एक लकड़ी का तख्त पड़ा था जिस पर चार कुत्ते अपनी देह सिकोड़े आराम से बैठे थे। पाँचवाँ जो कि बारिश में भींगता हुआ

आया था। वह तख्त से नीचे खड़ा अपने सिर और शरीर को झटके देता सुखा रहा था...।

पुट्टी ने ... तो कौतूहलवश बरामदे में चली ... कुत्ते पुट्टी की तरफ ...

... राम फरमा ... करते हुए ...

... रुह।

मम्मी ... रवाजा ... । मम्मी कु... पर बैठा ... होतीं।

... उसने बरामदे की तरफ ... बैठ गई।

“लो ... साथ हाजिर थीं। पुट्टी को टुटु की ... दिखा था।

“टुटु कहाँ है मम्मी?” उसने पूछा।

“... है ... तंग मत ... रना।”

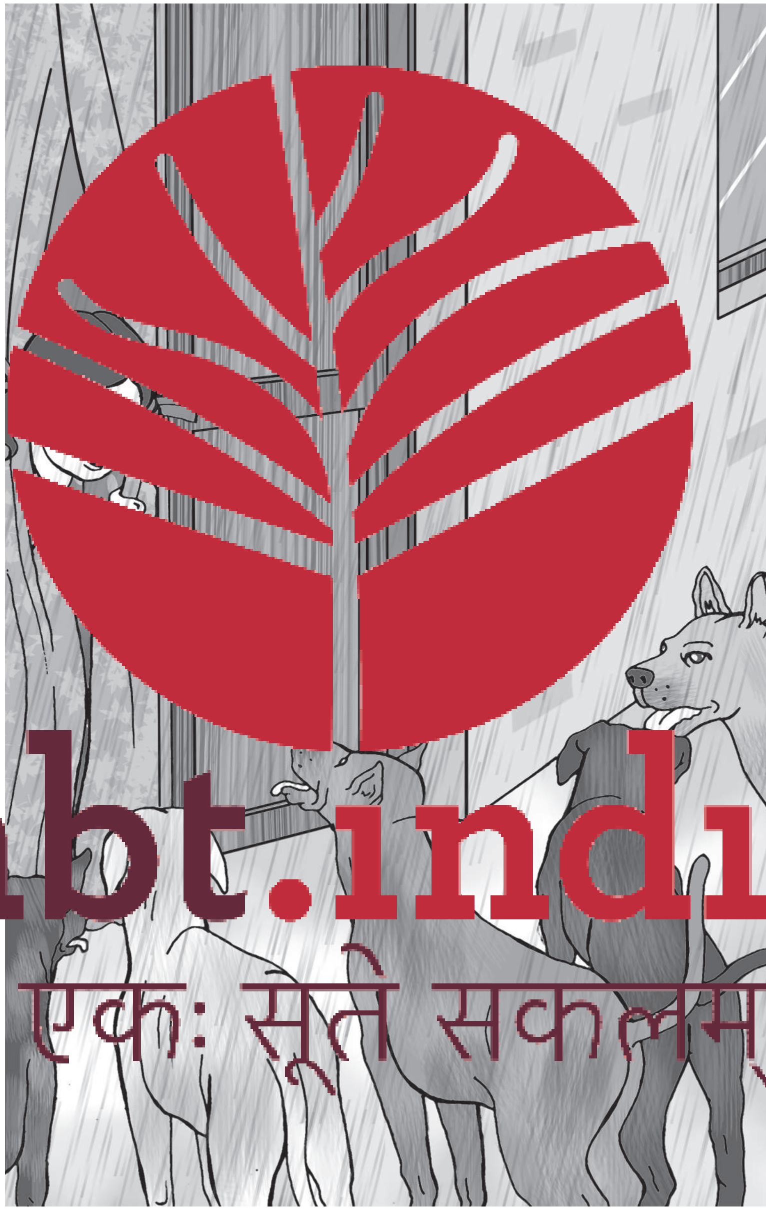
“सो ... है अभी? उसे हैरा... हुई।

“उसे बुखार है। कल स्कूल से आते वक्त भीग जो गया था।”

“और पापा?”

“वे डॉक्टर अंकल को लाने गए हैं।” कहकर मम्मी चली गईं।

पुट्टी हैरान थी कि बारिश में डॉक्टर अंकल कैसे आएँगे। उनकी क्लिनिक तो बंद होगी। उसके मन में आया कि मम्मी से इस विषय में पूछे, लेकिन पूछ नहीं सकी। वह चुपचाप नाश्ता करने लगी।



नाश्ता करके वह मम्मी के कमरे में चली आई। टुटु गर्दन तक चादर ओढ़े सो रहा था। पुट्टी ने आहिस्ता से उसके माथे पर हाथ रखा। माथा जल रहा था। [illegible] रा [illegible] छ [illegible] हा था। पुट्टी उदास हो गई। रोज़ [illegible] ता [illegible] यह [illegible] से [illegible] झगड़ता भी है। पर शै [illegible] क [illegible] ड़न [illegible] टुटु बा [illegible] ड़े इस टुटु से ज्या [illegible] है [illegible]

कुछ [illegible] के पास [illegible] सो [illegible] र धीरे-धीरे पलंग [illegible] चढ़कर [illegible] ले [illegible] ई [illegible]

[illegible] रोश-र [illegible] है। [illegible] गालों [illegible] मानो किसी ने रूई भर दी हो। [illegible] यम [illegible] ठ [illegible] बल [illegible] टमा [illegible] जब वह रो [illegible] के होंठ पक [illegible] पाट [illegible] की तरह [illegible] लिए पुट्टी उसे [illegible] ढ़ाती है [illegible] ल होठों पर पपड़ी ज [illegible] हैं। पुट्टी उसे देखती रही।

तभी उसने धी [illegible] ने अपने गाल उसके गाल से स [illegible] ा लिए।

"टु [illegible] अब [illegible] सोया न [illegible] जात [illegible] सफ [illegible]"

"पर [illegible] हें [illegible] खार है। तुम्हें सोना [illegible] हिए।" पु [illegible] ने [illegible] क [illegible] र पकड़ लिया।

"हूँ," वह कमजोर स्वर में बोला।

कुछ पल सोचने के बाद वह बोली—"कहानी पढ़कर सुनाऊँ?"

टुटु मुस्कराया। पुट्टी ने मेज से कहानियों की एक पत्रिका उठाई और उसे पढ़कर सुनाने लगी।

सुबह के साढ़े नौ बज चुके थे। बारिश अब थम गई थी, लेकिन आसमान से बादल नहीं छँटे थे। इस बीच पापा डॉक्टर अंकल को साथ लेकर

आ गए। डॉक्टर अंकल ने टुटु को देखा। "मामूली वायरल फीवर है। दो-एक दिन में ठीक हो जाएगा।" कहकर उन्होंने टुटु को दवाएँ दीं। पापा डॉक्टर अंकल को वापस [illegible] के बाहर निकलते वक्त आँखों से [illegible] ने क्या कहा।

[illegible] थी। पुट्टी ने पाप[illegible] बात याद थी [illegible] आधार पर [illegible] उन्होंने [illegible] रखा। [illegible] के पास अब बहुत [illegible] सलें, नई क[illegible] दोस्त। [illegible] बन गए हैं... [illegible] सारे सामान भी उस[illegible] सोचकर पुट्टी थोड़ी उदास [illegible]

वह अकेले ड्रा[illegible] किताबें देखने लगी। नई कित[illegible]ों की गंध अलग-सी होती है। उन्हें नाक के करीब ला[illegible] सूँघने पर एक [illegible] खु[illegible] नथुनों में [illegible] गंध [illegible] को [illegible] चीजें पढ़ने [illegible] उकसाती है।

लंच के बाद पापा भी उसके साथ आकर बैठे। टुटु ने उनसे अपने पास बैठने को कहा। वहीं किताबों में जिल्द भी लगा लेंगे। थोड़ी ही देर में टुटु के रूम की फ़र्श पर बैठे पापा और पुट्टी किताब-कॉपियों पर जिल्द चढ़ा रहे थे। पुट्टी टेप कटर से सेलोटेप के टुकड़े काटकर पापा को थमाए जा रही थी। पापा जिल्द चढ़ाते। फिर पुट्टी जिल्द चढ़ी किताबों पर स्टीकर चिपकाती। टुटु अपने बेड पर लेटे हुए दोनों को टुकुर-टुकुर देखता रहा। वह काफी देर से चुप था। अचानक उसने पापा से पूछा—



"किताबों में जिल्द क्यों लगाते हैं पापा?" "ताकि किताबें साफ और सुरक्षित रहें!"

पुट्टी की [illegible] किताबों से भरी थी। वह उस किताब को [illegible] रहे,

[illegible] पढ़[illegible]। [illegible] किताब की सिलाई या [illegible] अलग [illegible] जाते हैं।"

[illegible] पुट्टी [illegible] सीधी रख [illegible] रखते हैं, ताकि [illegible]

"हूँ[illegible] समझ में [illegible]।

[illegible] का मतलब [illegible] है..."

[illegible] सुनाई...बुक थीफ [illegible]

'बुक [illegible] उन्हें सँभाल के रखते थे। एक दूसरे को [illegible] थे। [illegible] आजादी का प्रतीक था। दूसरे विश्वयुद्ध से पहले नाजी सरकार ने सभी किताबों को जलाने का हुक्म [illegible] था, [illegible] आम नागरिकों [illegible]। [illegible] से जर्मनी की [illegible] डरती थी। तब एक [illegible] नाजी [illegible] से बचते-बचाते न सिर्फ बहुत-सी किताबों को जलाने से बचाया था, बल्कि उसने अपनी कहानियाँ भी लिखीं।'

कहानी सुनने के बाद पुट्टी ने सोचा कि अब वह अपनी किताबों को गंदा नहीं करेगी। उनको ठीक से अपने बैग में रखेगी। अच्छी तरह से बिना मोड़े। उन पर स्केच पेन या फिर स्याही वाली कलम से कुछ भी नहीं लिखेगी। अगर लिखना भी हुआ तो पेंसिल से लिखेगी। सभी किताबों पर जिल्द लगाएगी। जिल्द फट जाएगा तो दूसरा जिल्द लगाएगी, लेकिन

इसके लिए उसे जिल्द लगाना भी सीखना होगा। वह जिल्द लगाना पापा से सीख जाएगी। क्योंकि आज उसे पता चला कि सुरक्षित किताबें किसी भी जरूरतमंद के [illegible] है [illegible] भी किताबों को बचाने में मदद क[illegible]।

पु[illegible]

तु[illegible] पटटी क[illegible] खिड़[illegible] सामने [illegible] में ख[illegible]ान चारों तर[illegible]ें व कँटील[illegible]रों [illegible] घिरा है [illegible]र 'जतिन दास[illegible] बी[illegible] है। बागान के इस [illegible] क[illegible] रोज ही बारिश हो रही है। [illegible]दलो[illegible]ारे खिलती सूरज की कि[illegible]ों वाला दिन पुट्[illegible]ुत[illegible]ता है।

पापा दो दि[illegible]ों के लिए शहर से बाहर गए हैं। मम्मी बा[illegible]ी के साथ बैठी[illegible] रही[illegible]। बासंती न[illegible]ें ज[illegible] जा[illegible]का[illegible]सा [illegible]ने में म[illegible]न थी[illegible] नदी की लह[illegible]ों के [illegible]षय [illegible] बताते [illegible] वह [illegible] का [illegible]प नीचे रखकर हाथ से ऊँची और ऊँची लहरें बनाकर दिखाती। पुट्टी ध्यान से उसकी बात सुन रही थी।

"क[illegible] लहर बहुत ऊँची होती है बासंती?" पुट्टी ने उत्सुकता से पूछा।

"हाँ, पुट्टी बहुत ऊँची...पुल हिलने लगता है।"

पुट्टी सोचने लगी, काश! वह नदी की ऊँची लहरें देख पाती। बासंती आँगन में बर्तन धोने चली गई। पुट्टी भी आँगन में चली आई। गीले आँगन में जगह-जगह काई जमी थी। चारों तरफ पके आम गिरकर फट गए



थे। बासंती उन्हें बुहारकर फेंक देगी। आँगन में बायीं तरफ बाथरूम था। बाथरूम के बगल में खपरैल की छत वाला कमरा 'रानी का घर' है। रानी उनकी दुलारी गा[illegible] पा[illegible] व[illegible] िनों में उसे इस कमरे में बाँध देते थे[illegible] क[illegible] प[illegible] टा[illegible] ा [illegible] र के सामने बेहद मोटे त[illegible] आ[illegible] ड है[illegible] पास[illegible] था और पानी की [illegible] टी[illegible] त-[illegible] लक[illegible] टंकी [illegible] ँची। उसने टं[illegible] झाँक[illegible] पानी ऊप[illegible] मर[illegible] फ [illegible] र्गी। पानी [illegible] आम [illegible] ते तैर [illegible] थे। पु[illegible] रता [illegible] टंकी के [illegible] आ[illegible] प बैठ[illegible] पुट्[illegible] तजार [illegible] रहे थे।

पुट्टी [illegible] आम [illegible] प[illegible] ऊपर तै[illegible] कितने ह[illegible] न! उसने [illegible] में ह[illegible] डालक[illegible] कोशिश की। [illegible] लेकिन [illegible] आम तक नहीं पहु[illegible] ठी[illegible]

"बास[illegible] दो [illegible] से अनुरोध किया। बासंती ने आम निका[illegible] ी क[illegible]। ये पके हुए मीठे आम थे। आम भारी थे। अब पुट्टी समझ गई कि आम पानी में क्यों [illegible] गए थे! [illegible] ज [illegible] खकर वह [illegible] ी क[illegible] ी ग[illegible] कि[illegible] में पुट्टी के लि[illegible] टि[illegible]न तैयार कर [illegible] ी थीं।

"मम्मी, नदी में पानी क्यों बढ़ गया है?"

इडली की हाँड़ी आँच पर रखते हुए मम्मी ने कहा...

"क्योंकि कई दिनों से तेज बारिश हो रही है न! इसलिए!"

"ओ...हो...!" पुट्टी ने समझदारी से सिर हिलाया।

"अच्छा मम्मी, हम नदी देखने कब जाएँगे?"

"टुटु को ठीक हो जाने दो। फिर हम सब साथ में चलेंगे। है न? चलो अब तुम स्कूल के लिए तैयार हो जाओ।"

पुट्टी जल्दी से नहा-धोकर तैयार हो गई। टिफिन बैग में रखकर उसने रेनकोट नहीं पहना। वैसे भी उसे रेनकोट बिलकुल अच्छा नहीं लगता। पापा तो [illegible] रेनकोट सोफे पर ही छोड़ दिया। चुप[illegible] बारिश की धीमी फुहारें [illegible] र होता है न, बा[illegible] जो बारिश में [illegible] यों गहरे [illegible] आई है। [illegible] आगे [illegible] ड़ी दूरी पर एक [illegible] ह-रहकर उ[illegible] रहे थ, [illegible] ता रहा।

[illegible] के वह साँड से डरती [illegible] नजर पुट्टी को देखा, फिर [illegible]

कोई जवाब [illegible] निराश नहीं हुई। मजे से उछलती-कूदती वह आगे बढ़ गई। सड़क पर एक कुत्ता था [illegible] झबरी पूँछ वाला [illegible] जीभ [illegible] स पहुँचकर छाता उसके ऊपर तान [illegible] या। [illegible] ब पुट्टी [illegible] र वह कुत्ता [illegible] नों छाते के नीचे थे।

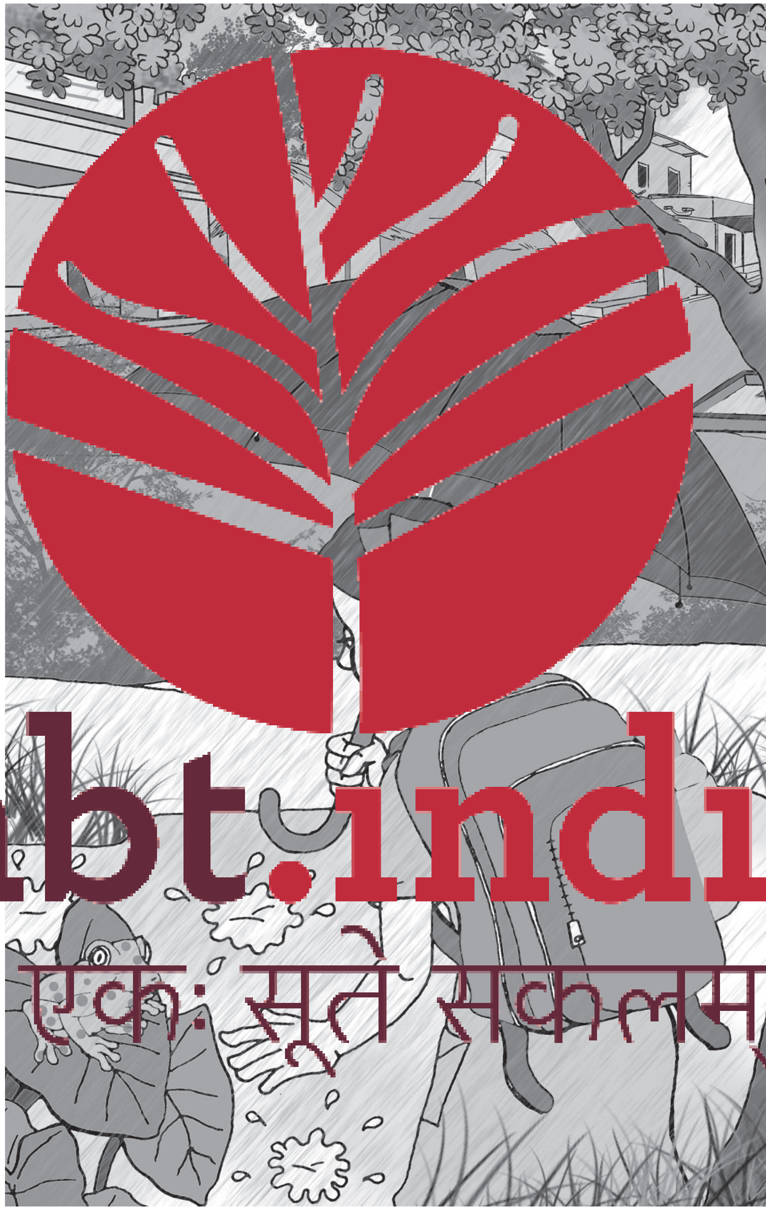
"अब तुम नहीं भीगोगे!" पुट्टी ने कुत्ते को थपथपाकर कहा।

कुत्ता जीभ निकाले बस उसे देखता रहा।

"चलो!" पुट्टी बोली। पर कुत्ता टस से मस न हुआ।

पुट्टी ने अपने घुटनों से उसे धकेला तो कुत्ता उल्टी दिशा में भागा। तब पुट्टी उसके कान पकड़कर खींचने लगी।

"बुद्धू इधर आओ, इधर! बाहर भीग जाओगे।"



लेकिन कुत्ता पूरा बुद्धू था। उसने पुट्टी की बात नहीं मानी, उल्टे वह उस पर गुर्राने लगा। पुट्टी उसे छोड़कर आगे बढ़ गई।

“टुटु की [illegible] र [illegible] त [illegible] आएगा। वह भी ऐसे ही बारिश में [illegible]

[illegible] टी [illegible] ल [illegible] पापा ने रास्ता भी [illegible] पुट्टी [illegible] साधे [illegible] नहीं जाती। [illegible] की गुन[illegible] चौर[illegible] है [illegible] विपरीत [illegible] में बढ़ [illegible] तर [illegible] ए चौ[illegible] जैस[illegible] दिनों में [illegible] ड़ियाँ [illegible] सू[illegible] कता [illegible] आजकल [illegible] में पानी भ[illegible] गया है। [illegible] ठहर [illegible] की नजर [illegible] के गड्ढे पर [illegible] ई। वह दि[illegible] पीले मेंढक गड्ढे [illegible]

“ट[illegible]

पीले मेंढ[illegible] थी [illegible] गोल आँखों को फैलाए उन्हें देखे जा रही थी। [illegible] सुं[illegible] दिख रहे थे वे पीले मेंढक। उनका रंग हल्दी-सा पीला है। पुट्टी दौड़कर उन तक पहुँची, ताकि उन्हें नजदीक से [illegible] के। लेकिन पु[illegible]टी की आहट पाकर वे सब बारी-बारी गड्ढे में [illegible] नहीं [illegible] खड़ी वह उनका इंतजार करती रही, पर वे बाहर नहीं आए। तभी एक धीमा टर्र-टर्र सुनाई पड़ा। वह चौंककर मुड़ी। एक नन्हा पीला मेंढक धीमे-धीमे उछलता गड्ढे की तरफ बढ़ा जा रहा था। वह पुट्टी के पास रुका और उसे अपनी चमकदार आँखों से देखने लगा। मानो वह पुट्टी को देखकर मुस्कराया हो। पुट्टी ने हाथ हिलाकर कहा—“टा...टा”।

नन्हा मेंढक बोला—“टर्र...टर्र...!” और पानी में कूद गया।

स्ट्रीट नंबर-56 में पूजा का घर था। पूजा को साथ लेकर कई गलियों और तंग रास्तों से गुजरती पुट्टी स्कूल पहुँची। पाँच-सात मिनट का रास्ता आधे घंटे से अ[illegible] हो[illegible] थ[illegible]ं है कि पुट्टी रास्ता भूल गई थी। स[illegible] कि [illegible]ट्टी [illegible]औ[illegible]ं करना बहुत-बहुत पसंद [illegible] अ[illegible] अक[illegible] क[illegible] अलग गलियों में [illegible] [illegible]र्क[illegible]लाश[illegible] हुए कॉ[illegible] अंतिम छोर प[illegible] [illegible] का मी[illegible] गोलियाँ [illegible] [illegible]ंडल के [illegible] फूल[illegible] गुल[illegible], गेंदा [illegible]तरानी। कभी-कभी [illegible] देखने[illegible]। गेट के भी[illegible] बँधा अल्सा[illegible] डॉ[illegible]टोनी अ[illegible]ड़ा रहता। वे [illegible] टोनी [illegible] भौंकना शुरू करता,

रा…

छुट्टी … ी धू… क… आ… र बारि… ही थी। खि… ों के पल्ला प… ी बा… को देख… छा लगता है। … ा रही थी। … ती हैं और पुट्टी … श … ी खिड़की पर बैठे गरमा-… ासं… क गीत सुनाती थी,

… खाड़… खाड़ा

तुई जे देखि सिंग खाड़ा…”

… सोच … थी, घर … र … साथ … रंगी… से ही … बारि… का दिन बनाएगी … र घर … हुँचक… उस… देख… के टु… सो रहा है। मम्मी ने बताया कि अब उसकी तबीयत पहले से काफी अच्छी है। कपड़े बदलकर वह रानी से मिलने आँगन में चली गई। अकेले डाइंग करने का उसका मन नहीं था। दोपहर ढलने पर थी। … का भू… र्दा हटाकर पुट्टी रानी के घर में गई तो कमरे में बारिश, सीलन, गोबर की मिली-जुली गंध थी। पुट्टी इस गंध की अभ्यस्त हो गई है। इसलिए उसे परेशानी नहीं होती, अलग-अलग खूँटों पर दो गायें बँधी थीं। सफेद गाय का नाम ‘रानी’ है। दूसरी भूरे रंग की है जिसका नाम ‘शीतल’ है। रानी



खड़ी जुगाली कर रही थी। उसने सिर घुमाकर पुट्टी को देखा। देह पर पूँछ इधर-उधर फटककर मच्छर भगाने लगी। मानो कह रही हो—

"आओ प[illegible] र रखा है।"

हालाँ[illegible] कि मक्खी-मच्छर भाग [illegible]

[illegible] उसके [illegible] उदासी [illegible] ने अपनी खु[illegible] चलाने [illegible] अच्छा [illegible]

शीतल, [illegible] ट। रानी जि[illegible] और सहनशी[illegible] है, [illegible] आक्रामक। मच्छ[illegible] जोरों से पैर पटकक[illegible] जल्दी से उपले जला दिया [illegible] प्रतिक्रिया नहीं दी। जिस दिन वह मैदान[illegible] झाड़ियाँ चरकर आती, उस दिन उसका मूड बहुत अच्छा रहता था। पुट्टी उसे छूकर ही समझ जाया करती [illegible] खुश रहती, [illegible] की नन्हीं हथेलि[illegible] की कोशिश करती थी। पुट्टी की बा[illegible] ध्यान से सुनते हुए धीरे-धीरे सिर भी हिलाती। पर जब उसका मूड उखड़ा हुआ हो तो बात-बात पर हुँकारते हुए कटारनी-सी सींग भी दिखाया करती। मजे की बात यह थी कि उसके सींग नहीं के बराबर थे।

लेकिन रानी तो टुटु-पुट्टी की सबसे अच्छी दोस्त है। पुट्टी सारी दोपहरी रानी से गप्पें लड़ाती थी, उसके जुएँ निकालती थी। उसकी नाद पर बैठी पुट्टी रानी की गर्दन सहलाया करती।



पुट्टी का स्पर्श रानी को पसंद था। पुट्टी जब भी उसकी गर्दन सहलाती, रानी सर ऊपर ही ऊपर किए जाती थी। मानो कह रही हो—"तुम्हारा इस[illegible] पुट्टी!"

पुट्टी [illegible] के बाद रानी 'मरखं[illegible] हुए गेट खोला ही [illegible] भीतर जाओ चु[illegible]।"

पुट्टी [illegible] खिड़की [illegible]।

"क्या [illegible] टुटु[illegible]

[illegible] पूछने पर [illegible] रहने का इशा[illegible] में नाद के पास ख[illegible]यी। अपने पैरों को झटक र[illegible] रखे उसे देखे जा रहे थे। मम्मी रानी [illegible]

"रानी को पेट दर्द हो रहा है!" टुटु ने बड़ों की तरह फुसफुसाकर कहा।

—"अ[illegible]!"

तभी उन दोनों ने देखा कि रानी के पिछले हिस्से से दो नन्हे काले खुर बाहर झाँक रहे हैं। वे भय और विस्मय से चीख पड़े थे। उनकी चीख सुनकर रानी परेशानी से इधर-उधर देखने लगी। मम्मी [illegible] दौड़कर कमरे में भागी आई थीं। धीमे स्वरों में बच्चों को डाँटते हुए उन्होंने दरवाजे-खिड़कियाँ बंद कर दीं। बच्चों को खाना देकर वे बाहर चली गईं। दोनों बेमन से खाना खा रहे थे। उनका सारा ध्यान रानी पर ही था। बाहर की हर आहट पर वे कान खड़े कर लेते।

थोड़ी देर बाद मम्मी ने दरवाजा खोलकर उन्हें बाहर बुलाया। रानी के पास हल्के भूरे रंग की कोमल-सी बछिया बैठी थी। उसके भूरे बाल एक दूसरे से चिपके [illegible] जा रही थी। कुछ देर बाद बछिया [illegible] संतुलन सँभाल नहीं [illegible] फिर तुरंत ही [illegible] परेशान था। [illegible]

[illegible] जिसके [illegible] तो रानी गुस्से से [illegible]

[illegible] डर है कि कोई [illegible]

[illegible] गए थे। उसके बाद उन्हें बहु[illegible] था। नन्ही बछिया की ताजी नाभि बहुत [illegible] पर चोंच मारकर बछिया को घायल कर सकता था। वे दोनों मुस्तैदी से पहरे पर डटे र[illegible]। उन्होंने बछिया [illegible] नाम भी र[illegible] दिया [illegible]।

कुछ [illegible] शीतल की नाभि [illegible] वह [illegible]-पुट्[illegible] के साथ खूब उछलती-खेलती थी। पूरे बागान में उछलती-कूदती चौकड़ियाँ भरती वह बड़ी होती गई।

...नू ...ने

स्कूल से ... सा...र ...टक... कमरे में ... टुटु बैठा हो... रहा था। ...ने फ्रॉक की जेब से ... डिबिया निक...

...?” ... मुस्कराई।

...है ... जादू!”

दरअसल आज ... सौ... पुट्टी को माचिस की डिबिया दिखा...। उसने सावधानी से डिब्बे का ढक्कन थोड़ा-सा खिसकाया। पुट्टी ने ... झुककर ...खा था। उसमें ... पूरे ... हे-न... काले थे। ...टी समझ नहीं ...ई ... इसमें अनोखा क्या है...

“इसे रात के अँधेरे में बत्ती बुझाकर देखना!”

सौरभ ने रहस्यमयी मुस्कान के साथ कहा। डिब्बे को ... से रखकर टुटु-पुट्टी बेसब्री से रात का इंतजार करने लगे।

धीरे-धीरे घिरती साँझ के साथ ही घर में और बाहर बिजली के लट्टू रोशन हो उठे। स्कूल का होमवर्क करने के बाद टुटु-पुट्टी जल्दी खाना खाकर सोने चले गए। घर की सारी लाइट्स बंद होने के बाद पुट्टी ने ड्रावर से डिबिया निकाली। डिबिया को टुटु खोलना चाहता था। थोड़ी



ना-नुकुर के बाद पुट्टी ने उसे ही डिबिया खोलने को दे दिया। टुटु के डिबिया खोलते ही धीरे-धीरे नन्ही-नन्ही रोशनियाँ उड़ने लगीं। वे दोनों हैरान रह गए। [illegible] मुट्ठी में [illegible] कोशिश की। पर वे कमरे में ऊपर [illegible] तैरती नन्ही पीली रोशनी [illegible] रह [illegible]

[illegible] उन [illegible] रोशनियों [illegible] पकड़ने की [illegible] करते रहे। क [illegible] छत [illegible] जा [illegible] ऊँचे दरवाजे पर! [illegible] बैठ [illegible]।

[illegible] लाल [illegible] था। [illegible] भी फूल जगमगा [illegible] ही [illegible] दूसरे फूल पर [illegible] खिल [illegible] रोशनी से जग [illegible] को मुट्ठी में भर [illegible] रखा। हथेली के भीतर पीली- [illegible] बंद किए मम्मी के बिस्तर की ओर बढ़ी [illegible] पुट्टी ने मम्मी के दुपट्टे पर मुट्ठी खोल दी। वे रोशनियाँ मम्मी के हरे दुपट्टे पर टिम-टिम टिम-टिम जग [illegible] थीं।

कुदरत का अद्भुत पिटारा अलग-अलग रूपों में पुट्टी के सामने खुलता जा रहा था। हर नजारे पर वह चौंकती...उसे आश्चर्य होता। अरे ऐसा...ऐसा भी...ऐसा क्या? सारे रिश्ते उसी पिटारे से एक-एक करके सामने आते जाते। वह हैरान होती। उन रहस्यों को जानने की इच्छा उसमें बढ़ जाती। जुगनुओं की टिमटिमाहट उसे नए जलते-बुझते सपनों की ओर ले चली। जहाँ वह सौरभ का हाथ थामे उड़ी जा रही थी... 'थैंक यू सौरभ'।



अपराध-बोध

स्कू[illegible] नियम [illegible] कि [illegible] के [illegible] चाहिए। जिस[illegible] ने कि[illegible] मिलती थी। क्लास [illegible] ओं [illegible] पाठ खोलने के लिए कहा। [illegible] फ[illegible] कहीं कोई आवाज नहीं थी। पुट्टी न [illegible] क[illegible] खोल लिया। उसने सौरभ को [illegible]खा। सौरभ ने डेस्क पर हिंदी की नोटबुक खोल रखी थी।

"तु[illegible] किता[illegible]कर नहीं [illegible]?" [illegible]छा।

"अभी [illegible]य[illegible] किताबें नहीं खरीदी [illegible]!" [illegible]भ [illegible]ड़ा उ[illegible]स हु[illegible]।

"सर ने देख लिया तो डाँट पड़ेगी।" पुट्टी ने फुसफुसाकर कहा। उसकी बात सुनकर सौरभ का मुँह उतर गया। उसका परेशान चेहरा देखकर पुट्टी ने धीरे से कहा—"अच्छा, तुम परेशान नहीं हो। सर पूछेंगे न, तो मैं कह दूँगी कि तुम्हारी किताब है।"

इतना कहकर पुट्टी ने किताब डेस्क के बीचों-बीच रख दी। उसे विश्वास है कि सर उसे ज्यादा नहीं डाँटेंगे, क्योंकि वह रोज किताबें लेकर आती है। हाथ में किताब लिए सर सस्वर कविता का पाठ करने लगे।



“दौड़ी-दौड़ी आई पकौड़ी
छुन-छुन [illegible] तेल में नाची
[illegible]ट[illegible]
[illegible]

[illegible] था। कुछ पल पह[illegible] बजा रहा था। [illegible]ने धीरे [illegible] पकौड़ी [illegible]हैं।”

[illegible]टी है[illegible]।

“आलू, [illegible] [illegible]वाज में थो[illegible]

[illegible] पास पहुँचकर उन्होंने [illegible]

“क्या [illegible]

दोनों बच्चे सहम[illegible] सामने डेस्क पर [illegible]ी अकेली कित[illegible] पर पड़ी।

[illegible]यह [illegible] किताब है?

पुटटी[illegible] धी[illegible] से कह[illegible]—“सौ[illegible] की

—“किसकी है?” सर शायद पुट्टी का जवाब सुन नहीं पाए थे। वे और ऊँचे स्वर में चिल्लाए। उनका चेहरा क्रोध से [illegible] था। पुट्टी डर [illegible]। उसने हड़बड़ाकर कुछ अस्पष्ट-सा कहा। वह खुद भी नहीं समझ पाई कि उसने क्या कहा। बस उसका सिर हाँ में हिला। उसके बाद सर ने सौरभ को कान पकड़कर खड़ा होने का आदेश सुना दिया। वह ब्लैकबोर्ड के सामने कान पकड़े खड़ा था। सारी क्लास उसे ही देख रही थी। थोड़ी देर बाद बच्चे फिर से कविता गाने लगे। पर अब पुट्टी का मन



कविता की तरफ से बिलकुल ही हट गया था। सौरभ का सिर झुका हुआ था। आँखों से टप-टप बहते आँसू उसकी शर्ट पर गिर रहे थे। सौरभ के वे निर्दोष आँसू ... बोध की कचोट बनकर हमेशा के ...

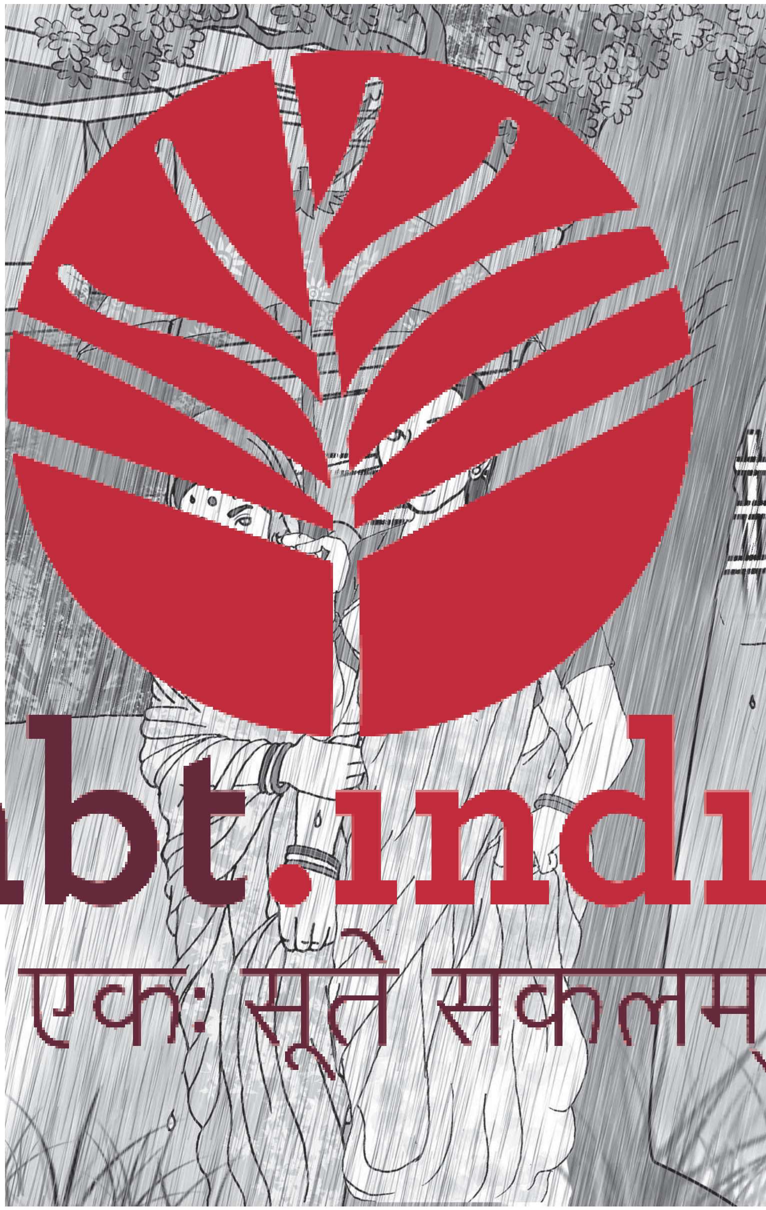
[illegible] वाली [illegible]का

व[illegible] बारिश स[illegible]ार [illegible]। सुब[illegible]बिजली [illegible] के बाद मम[illegible] बरामद[illegible] बैठे टुटु-पुट्टी [illegible] मम्मी-पापा के ह[illegible]ी। [illegible]ख रहा था। बागान [illegible] के[illegible]यी। सामने वाले क्वार्टर में कन[illegible]ाज[illegible]ाया था, पर बारिश में थपेड़ों से टूटकर वह [illegible] गि[illegible] नदी की दिशा से कुछ लोग साइकिलों पर फल-सब्जियाँ लादे बाजार की तरफ जाते दिखे। कैरियर पर लदी [illegible] व [illegible] की टोकरि[illegible] प्लास्टि[illegible] की [illegible]नों [illegible] भी रंग-बिरंगे प्लास्टिक के बड़े-बड़े टुक[illegible] को [illegible]ने से ओढ़[illegible] टोपी[illegible] बर[illegible]ती सिर पर डाल रखी थी। तेज बारिश से बचने की कोशिश करते वे साइकिल भगाए जा रहे थे। पुट्टी ने पापा को कहते सुना...

"घर में बैठकर बारिश देखना बहुत अच्छा लगता है, पर जिन्हें काम करना हो उनके लिए बारिश कितनी कष्टदायक होती है न!"

"वहाँ जतिन दास के घर के बाहर कौन खड़ा है?" सहसा पापा बोले।

पापा की बात सुनकर सब उधर ही देखने लगे थे। मम्मी भी कुछ क्षण देखती रहीं, फिर वे छाता लेकर बाहर निकल गईं। बारिश तेज हो



गई थी। जब वे वापस आईं, तब उनके साथ कोई और भी था। वे जतिन दास की माँ थीं। टुटु-पुट्टी उन्हें 'काकी माँ' कहते हैं। वे लोग उड़ीसा के रहने वाले हैं। [illegible] पू[illegible] मंदिर गई थीं। उसी बीच घरवाले [illegible] से वापस आईं तो गेट प[illegible] ही खड़े रहना पड़ा [illegible] कपड़े [illegible] र मम्मी ने उ[illegible]

"इत[illegible]?" [illegible]। उनके [illegible]य।

काफी [illegible] तरफ [illegible]। पुट्टी ने [illegible] से देखा। [illegible] चेह[illegible] र असं[illegible] की पलकें जल्द[illegible] किसी [illegible] था। उनकी सफेद [illegible]

रात [illegible] मम्मी [illegible] बिछावन चेक करने आई थीं। पुट्टी ने [illegible] पूछा...

"मम्मी, वे लोग काकी माँ को अकेले छोड़कर क्यों चले गए?"

"[illegible] कि वे [illegible] बुजुर्गों [illegible] इज्ज[illegible] नहीं [illegible] ने पुट्टी का म[illegible] सहलाते हुए धीरे [illegible] कह[illegible]

पुट्टी ने कभी 'काकी माँ' से बात नहीं की। हालांकि कभी-कभी उसका बहुत मन होता था उनसे बात करने का। मम्मी बताती हैं कि उसका जन्म होने पर काकी माँ ने उसे दुलारते हुए उसका नाम पुट्टी रख दिया था।

"यह तो प्यारी-सी पुट्टी है!" और काकी माँ के गोद में नन्ही पुट्टी मुस्कराने लगी थी।

(उड़िया भाषा में 'पुट्टी' का अर्थ है नन्ही बच्ची।)



रोज स्कूल जाते हुए पुट्टी उन्हें देखती थी। घर के सामने ढेर सारे कबूतरों के साथ चबूतरे पर बैठी वे कुछ सोचती रहतीं। उसे देख काकी माँ आँचल की गाँठ [illegible] मि[illegible] औ[illegible] के टुकड़े पुट्टी की हथेली पर रख दि[illegible] क[illegible]

[illegible] जी [illegible] है [illegible]

[illegible] पुट्ट[illegible] आगे बढ़ [illegible]ता।

[illegible]क [illegible] री [illegible] र [illegible] अभी [illegible] की नज़र [illegible] माँ [illegible] चु[illegible] कबूतरों [illegible] खेलना [illegible] ों का [illegible] लगे [illegible] गुटर-गूँ गुँटर-गूँ कर रहे थे। [illegible] के का[illegible] म[illegible] के [illegible] ुए। [illegible] काकी माँ मु[illegible] बैठने का [illegible] वे [illegible] से चा[illegible] रही थीं। पास [illegible] था। [illegible] की हथेलियों से चाव[illegible] उनक[illegible] हलके से रगड़ देता। काकी [illegible] टु-पु[illegible] काकी माँ और कबूतरों की दोस्ती देख रह[illegible] भी [illegible] काकी माँ के साथ बैठे गप्पें लड़ा[illegible]। कबूतरों को दाना देते। पर कबूतरों से अभी उनकी दो[illegible]ी नहीं हो पाई [illegible]ों [illegible] उदास देखक[illegible] काकी माँ [illegible] से [illegible]

“दोस्[illegible] कर[illegible] के लिए विश्व[illegible] जीत[illegible] पड़[illegible] है [illegible]र वि[illegible]ास प्रे[illegible] से आता है!” टुटु की गोल नाक हिलाकर काकी माँ हँस पड़ीं।

[illegible] पुल

बारिश [illegible] गई थी। पुल [illegible] ही [illegible] बल का चे[illegible] चेकपोस्ट [illegible] पास [illegible]-पकौड़ों [illegible] कान थी। दुका[illegible] थी। सौ[illegible] थमा रहे थे। स[illegible] पर [illegible] कर मुस्कराए। पुट्टी ने [illegible] का [illegible] और पापा का हाथ पकड़े आगे बढ़ [illegible]

नदी उफान पर थी। पापा बच्चों को लेकर पुल के पास [illegible]हुँच गए। वहाँ [illegible]ड़े सिपाही [illegible] उन्हें बच्चों के साथ ज्यादा आगे नहीं बढ़ने [illegible] हिदायत दी। [illegible]रजती [illegible]ई [illegible]दी की पहाड़-[illegible] ऊँची-[illegible]ऊँची [illegible]हरें [illegible]खकर [illegible]च्चे [illegible]न [illegible] कटती जा रही थी। मटमैले झाग[illegible]वाला पानी पुल के नीचे से सरपट गुजर रहा था। जड़ से उखड़ चुके पेड़-पौधे मरे हुए मवेशी-जानवर और ढेर सारा कचरा नदी में बहता हुआ जहाँ-तहाँ अटक रहा था। नदी की तेज लहरें हर संभव कोशिश कर रही थीं उन्हें बहा ले जाने की। तेज ऊँची लहरें जब पुल से टकरातीं तो एकबारगी ही पुल काँप उठता था। बहुत सारे लोग नदी का भयंकर रूप देखने आए थे। उनकी बातचीत से यही लग रहा था कि नदी अभी और संकट पैदा करेगी। नदी का रौद्र रूप बच्चों को भयभीत





भी कर रहा था और रोमांचित भी। तभी टुटु की नजर उफनती नदी की सतह पर तेजी से बनते और घूमते पानी के गड्ढे जैसी लहर पर पड़ी। वह पानी की लहर ते[illegible]टट की तरह गोल-गोल। किसी फ्ला[illegible]ते हुए।

[illegible] टुटु [illegible]ए पूछा था।

[illegible]

"व[illegible]या। [illegible]जलभँ[illegible]

[illegible] होता। [illegible]" पुट्[illegible]जल[illegible]ख [illegible]ज गति [illegible] पानी [illegible] गोल-गोल [illegible] की [illegible] लग रहा था। [illegible] चीजें [illegible] हैं जैसे [illegible]वगैरह। कु[illegible] पानी में [illegible] पातीं [illegible], मरे हुए जा[illegible] चीजें। वे नदी के [illegible]कभी-कभी इन [illegible] रुकावट के कारण [illegible]

"मतलब[illegible] रुकावट के कारण है?" टुटु ने पूछा।

"हाँ बेटा! और वर्लपूल में फँस जाने के बाद निकलना मु[illegible]कल होता है!"

काफी [illegible] वे नदी की उफनती लहरें और जलभँवर को [illegible]ते रहे। शाम ढल चुकी थी। लोग वापस लौटने लगे थे। गहराती शाम में नदी का शोर भयानक लग रहा था।

रात को सोते वक्त भी टुटु-पुट्टी देर तक नदी और वर्लपूल की बातें करते रहे थे। धीमी बारिश के बीच झींगुर का कर्कश एकालाप गूँज रहा था। सहसा तेज बिजली चमकी और लाइट गुल हो गई। घने अंधकार में नदी का गर्जन कमरे तक सुनाई पड़ रहा था। टुटु, पुट्टी से लिपटकर सो गया।

क[illegible]स में [illegible] ली तो [illegible] गल[illegible] में कम बच[illegible] फ़र्स्ट बच [illegible] बैठ[illegible] स्वाति [illegible] उड़’ खेल रही [illegible] की को [illegible] पसंद था।

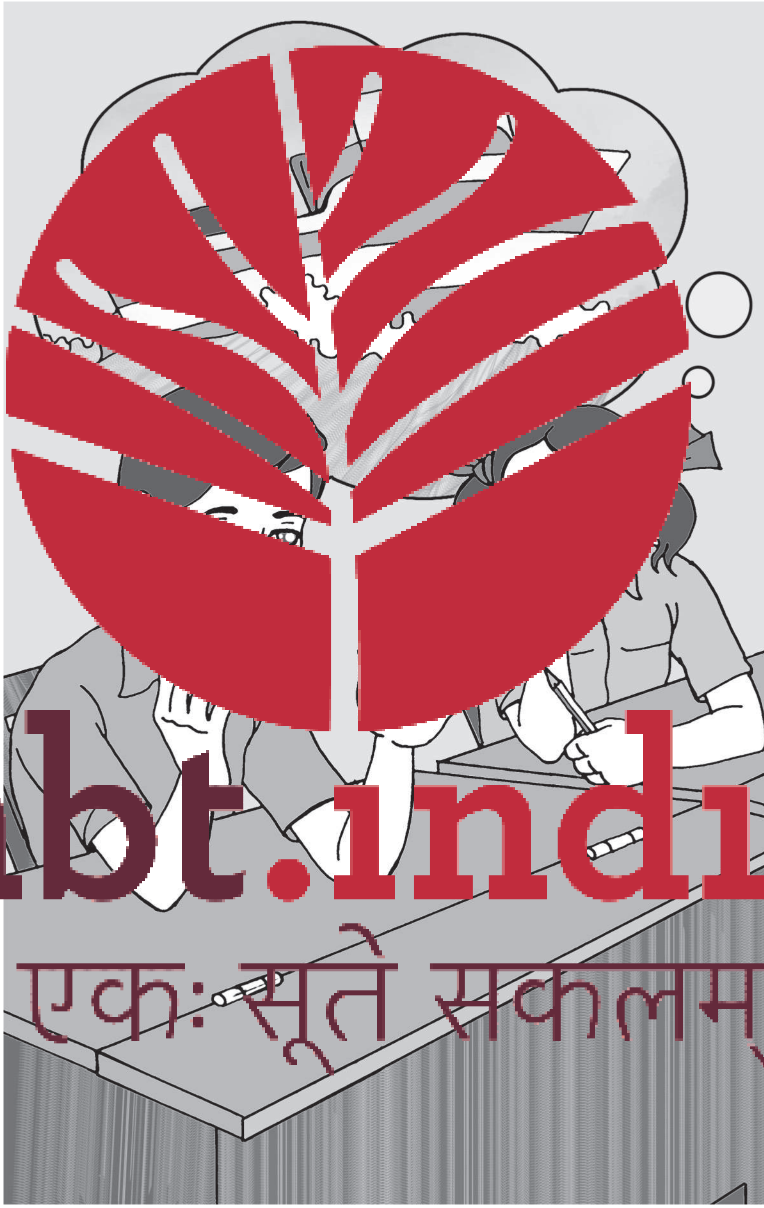
“[illegible] या [illegible]।” सौरभ की आँखें खुशी [illegible]

“क्यों?” पुट्टी [illegible] खु[illegible] कारण नहीं समझ पाई थी।

“किताबें खरीदने।”

[illegible] सौरभ [illegible] पुट्टी को [illegible] सारा [illegible] भाई [illegible] छुट्टी के बाद [illegible] या [illegible] शह[illegible] घुमाने के लि[illegible] ले ज[illegible] हैं। [illegible] भी [illegible] करनैल सिंह प[illegible]’, कभी बोटिंग क्लब। बोटिंग क्लब में मशीन वाली नावें हैं। पर सौरभ ने कभी बोटिंग नहीं की। वह तो बस जलकौओं को देखता रहता था। पानी में जी भर गोताखोरी के बाद जलकौए चट्टानों पर बैठे शाम की ढलती धूप में पंख सुखाते थे।

शहर घूमने की बातें बताते वक्त सौरभ खुशी से भर उठता था। उसके भैया बहुत अच्छे हैं। पिछले हफ्ते वे उसे हिलटॉप ले गए थे। हिलटॉप चित्तरंजन की सबसे ऊँची पहाड़ी है। वहाँ से पूरा चित्तरंजन दिखता है।



सौरभ के शहर भ्रमण के किस्से सुनकर पुट्टी उदास हो गई थी। उसे सौरभ से थोड़ी ईर्ष्या भी हुई। हालाँकि वह रहती तो शहर में ही है, पर इतना वह कभी [illegible] सोचा कि वह भी पापा से शहर घुमा[illegible] अन्त्याक्षरी खेले। साथ-[illegible] छुट्टी [illegible] दिनों तक तेज बा[illegible] बाद मिलने क[illegible]

पुल [illegible] खबर [illegible] देर शाम [illegible] नदी [illegible] पुल [illegible] टूटकर [illegible] गया। कुछ ग्रामीण [illegible] गरजती भ[illegible] में बह जाना [illegible] डरावनी [illegible]

[illegible] थी। [illegible] असर पुट्टी साफ [illegible] सटीक तरीके से अभिव्यक्त [illegible] तरंगें वे सहज ही बूझ लेते हैं।

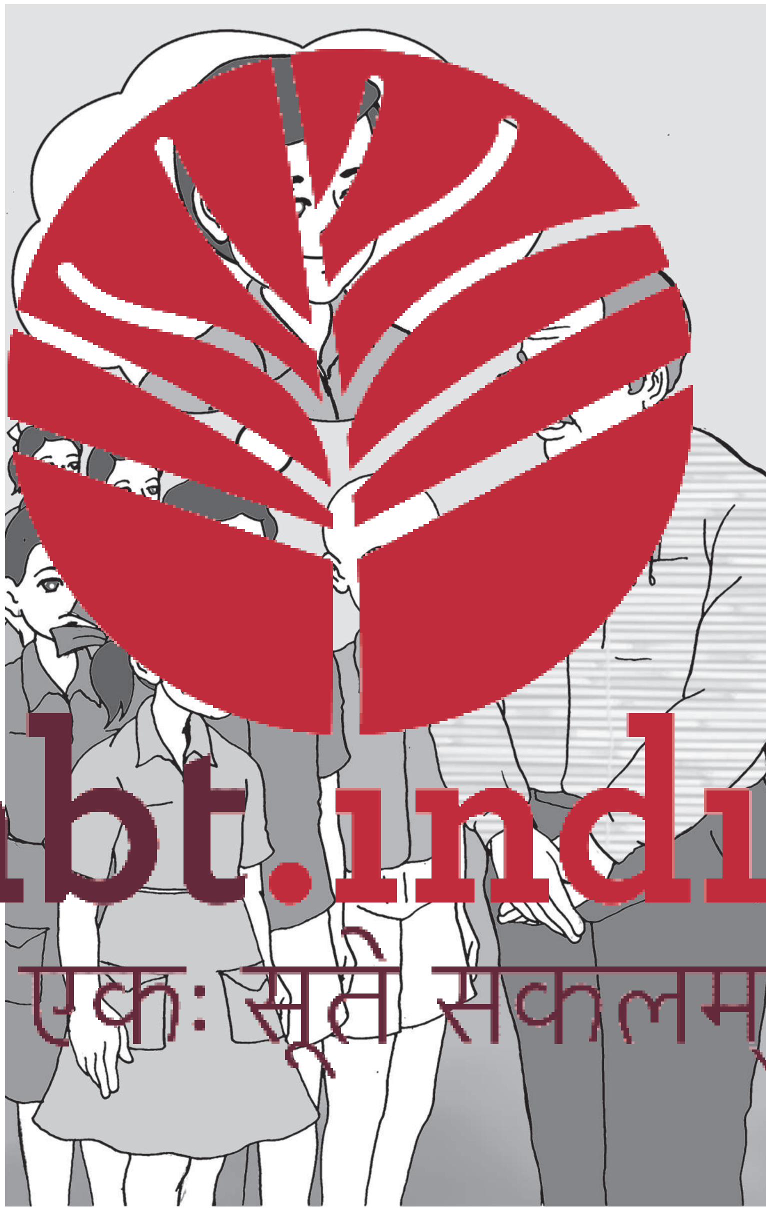
बासंती नहीं आई थी। उसका होना टुटु-पुट्टी के लिए एक साथी का होना [illegible] बातें करती थी [illegible] शैलियाँ बताती थी। वह परिवार की एक जरूरी सदस्य [illegible] मंडी से खाली थैला लिए वापस आए पापा ने मम्मी से कहा।

"सूखी बड़ियों और चने वगैरह से ही काम चलाओ।"

झोला वापस लेते हुए मम्मी फुसफुसाई थीं।

"बेचारे किसानों की तो सारी सब्जियाँ ही बरबाद हो जाएँगी।"

पुट्टी मन-ही-मन यह कल्पना कर रही थी कि बासंती अपने संगी-साथियों के साथ हँसती-बतियाती नदी तट पर पहुँची होगी। रोज की तरह रंग-बिरंगे प्लास्टिक ओढ़े किसान फल-सब्जियों से लदी साइकिलों पर



भागते-दौड़ते पहुँचे... पर यह क्या? पुल तो है ही नहीं! कितनी हताशा हुई होगी उन्हें?

पुल जो [illegible]। गाँव और शहर को जोड़ता था [illegible] के बाजार से जोड़ रखा [illegible]

[illegible] जोर अब कु[illegible] आए [illegible] से नहीं [illegible] पहुँचाएँ। प्रार्थना के [illegible] हेड सर स[illegible] ही भारी मन [illegible]

[illegible] टूट गया जिसमें कुछ लोग [illegible]। उसी हादसे में हमने अपना एक छात्र [illegible] खो दिया। विद्यालय परिवार सौरभ के परिवार के दुख में भागीदार है। आइए हम सब उसकी आत्मा की [illegible] लिए [illegible] मिनट का मौन [illegible]

यह सुनकर टुट्टी को कुछ समझ नहीं आया। अभी तो छुट्टी के पहले दोनों ने अवकाश के बाद एक दूसरे से मिलने का वादा किया था। उसकी नजर अनायास आसमान में उठ गई। दूर नीले आसमान में पक्षी उड़ रहे थे। वे इतनी दूर थे कि उनकी आवाज टुट्टी को सुनाई नहीं पड़ रही थी। उसने सोचा कि क्या सौरभ इतनी ही दूर चला गया है। अभी तक किसी को खो देने की पीड़ा वह नहीं जानती थी। पर इतना वह समझ गई है कि शायद सौरभ से वह कभी नहीं मिल पाएगी। उसकी आँखों के आगे सौरभ का गोल-मटोल प्यारा-सा चेहरा तैर गया। वह पहले दिन की

भेंट जब दोनों ने मिलकर पंख के लिए घर बनाया था। पुट्टी ने आँखें बंद कर लीं। सच कहो तो उसे प्रार्थना का अर्थ नहीं पता। रोज बस वह शब्द दुहराती थी … कुछ उसके गले में फँस जा रहा था … थी। इमली के बीज, … बचे रह गए थे। … उसके … आँसुओं की ल… खिंच …

[illegible] और [illegible] बहु[illegible] रहे। [illegible] में कई ब[illegible]चे नदी [illegible] आने [illegible] सूनी हो ग[illegible] बेंच पर पु[illegible]प अकेली [illegible]र देखती रहती [illegible] कोई नहीं था। डे[illegible] रो[illegible]ड से खुरचकर अपना और [illegible] के[illegible] को अकसर लगता जैसे अभी वह तुलमुल [illegible] दौ[illegible] के दरवाजे प[illegible] हाथ उठाए खड़ा हो जाएगा।

[illegible] इन छल!" [illegible] 'स[illegible] ही [illegible]ता[illegible]। [illegible] के बहुत समझा[illegible] पर [illegible]ी उस[illegible] हाथ उठाक[illegible] आज्ञा माँग[illegible] नहीं [illegible]टा था।

कुछ दिनों बाद क्लास टीचर ने सौरभ की उस खाली जगह पर पूजा को बैठा दिया। धीरे-धीरे पुट्टी और पूजा में दोस्ती शुरू हो गई थी।

क्लास में बहुत हलचल थी। बच्चे धीमे स्वरों में एक दूसरे से कुछ बातें कर रहे थे। पुट्टी ने सोचा कोई खास बात तो जरूर है। उसे पूजा ने बताया कि स्कूल में नए टीचर आने वाले हैं। पुट्टी सोचने लगी नए टीचर कैसे होंगे? फिर वह कल्पना करने लगी कि नए टीचर को कैसा होना चाहिए?





कक्षा में बच्चे गप्पें लड़ाने में व्यस्त थे। ब्लैकबोर्ड साफ नहीं था। टेबल व कुर्सियों पर भी चाक के नन्हे टुकड़े व बारीक सफेद धूल फैली थी। कागज के [illegible] पे[illegible] के [illegible]र्श पर बिखरे पड़े थे। अचानक [illegible]ल[illegible] [illegible]तो उसकी क्लास उन्हें [illegible] उस[illegible]र [illegible]कट्ठा करके डस[illegible]या [illegible]ी कोशिश क[illegible]गी। [illegible]ड़[illegible]ी। तभी [illegible]क [illegible]ी। [illegible] डस्टर से [illegible]पा[illegible] कुर्सी [illegible] उसने [illegible] मेज [illegible]ी चौड़ी और ऊँचा [illegible] कि[illegible] [illegible]टर से [illegible] पर बीच में [illegible]ी परत [illegible] यह [illegible] से बाहर था। [illegible] पर [illegible] बैठकर मेज पोंछने [illegible] ब्ल[illegible] [illegible] गई थी। पर पुट्टी खुश [illegible] उ[illegible]। सहसा उसे लगा कि पूरी क्लास कित[illegible]? [illegible] सिर उठाकर सामने देखा। आँ[illegible] के सामने बाल गिर आए थे। उसने उँगलियों से बा[illegible] हटाने की कोशि[illegible] हेड[illegible] के साथ [illegible]गंतु[illegible] थे [illegible] [illegible]ट में म[illegible] से [illegible] ग[illegible]। नवागंतुक पु[illegible]ी की ओर [illegible] देख रहे थे। पुट्टी की फ्रॉक सफेद धूल से सनी थी। मोजे ढीले होकर जूतों पर सरक गए थे। बार-बार हटाने के बावजूद बाल उसकी आँखों के आगे गिर जा रहे थे। कुल मिलाकर यह दुबली-पतली बच्ची उन्हें शरारती और प्यारी [illegible]।

"यह सब तुमने साफ किया है?"

नवागंतुक ने ब्लैकबोर्ड की ओर इशारा करते हुए पूछा। पुट्टी सोचने लगी थी कि उसे क्या जवाब देना चाहिए। तभी उन्होंने कहा...

"गुड गर्ल!"

पुट्टी को यह सुनकर अच्छा लगा। उसने मन-ही-मन दुहराया.... गुड गर्ल... गुड गर्ल... गुड गर्ल।

“बच्चों य[illegible]न[illegible]र [illegible]प्रसाद जी।” हेड सर ने बच्चों से [illegible]तु[illegible]चि[illegible]कर[illegible]हा[illegible]

[illegible]र[illegible] “नए [illegible]ाने [illegible]

एकः सूते सकलम्

[illegible] पा[illegible]य प[illegible]ाते [illegible] विषय-[illegible]कला की क[illegible]स सप्ता[illegible] [illegible]न [illegible]ी थी[illegible] शिक्षक [illegible] लेते थे। चि[illegible]ओं का [illegible]टी का वि[illegible] उसे चित्र बना[illegible] [illegible]रते हुए वह थोड़ी ह[illegible] ही[illegible]। पर पेंसिल से चित्रांकन वह [illegible]। [illegible]र्ड पर कुछ चित्र बना देते और बच्चों को वह [illegible] ड्रा[illegible] उतारना होता। [illegible]किन आज सर [illegible] बच्चों से [illegible]नी इच्छानुसार कोई भी चित्र बनाने को [illegible]हा। बच्चे अप[illegible] ड्राइ[illegible] बुक[illegible]र झुके थे। पु[illegible]टी, पू[illegible] और कुणा[illegible] [illegible]मा[illegible] [illegible]इंग ब[illegible]ने में [illegible]त थे। पूज[illegible]ने पहा[illegible] और [illegible]दी [illegible] ड्राइं[illegible] बन[illegible]। कु[illegible]ल ने [illegible]क बड़ा घर बनाया था। उसने पुट्टी को बताया कि जब उसके पास जादुई श[illegible] आ [illegible] तो [illegible] ड्राइंग के [illegible]र में [illegible]

पुट्टी ने [illegible]मले में [illegible]दे का फू[illegible] बना[illegible] [illegible]। कुणाल कुछ पल चित्र को देखता रहा। फिर बोला—

"गमला ठीक नहीं है। फूल तो गिर जाएगा?"

"कैसे?" पुट्टी हैरान हो गई। उसे कुणाल का यह कहना बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा।



“यह गमला ऐसे कैसे खड़ा रह पाएगा?”

दरअसल पुट्टी ने तिकोना गमला बनाया था। कुणाल कहना चाहता था कि गमला [illegible] । गमले के खड़े होने के लिए आधा [illegible] पुट्टी को समझा नहीं [illegible] यह थी कि पुट्[illegible] फिर उसने [illegible] । उसने [illegible] बीच में [illegible] सँभालने वाले दोनों [illegible] साथ [illegible] ।

[illegible] बच्चों का [illegible] मंद-मंद [illegible] बच्चों में उन्हें [illegible] उन्होंने तीनों बच्चों [illegible] उठे।



बच्चों का ... दिन ... था ... को पूरे

श... पूजा ... जा... है। हिं... के अनुसार

विश्व... रिंग ... कारखाने में

जगह-ज... ाँ ... रखाने के बाहर

मेला भरता ... ट्टी ... अधिक कारखाने के

अंदर घूमने का आक... दो... रहे थे कि वह कैसी जगह

होगी जहाँ रेल के बड़े-बड़े इंजन बनते हैं। जब कभी वे कारख... के सामने

से गु... कार... के भीतर ... इच्छा ... पा...।

पर ...स की ऊँची दीवार के पार ...स टि... की ... ोड्स ... दिख...ाई

पड़ते और गेट पर मुस्तैदी से पहरा देते आर.पी.एफ. यानी रेलवे सुरक्षा बल

के जवान। टुटु उन जवानों की राइफल को बहुत उत्सुकता से देखता था।

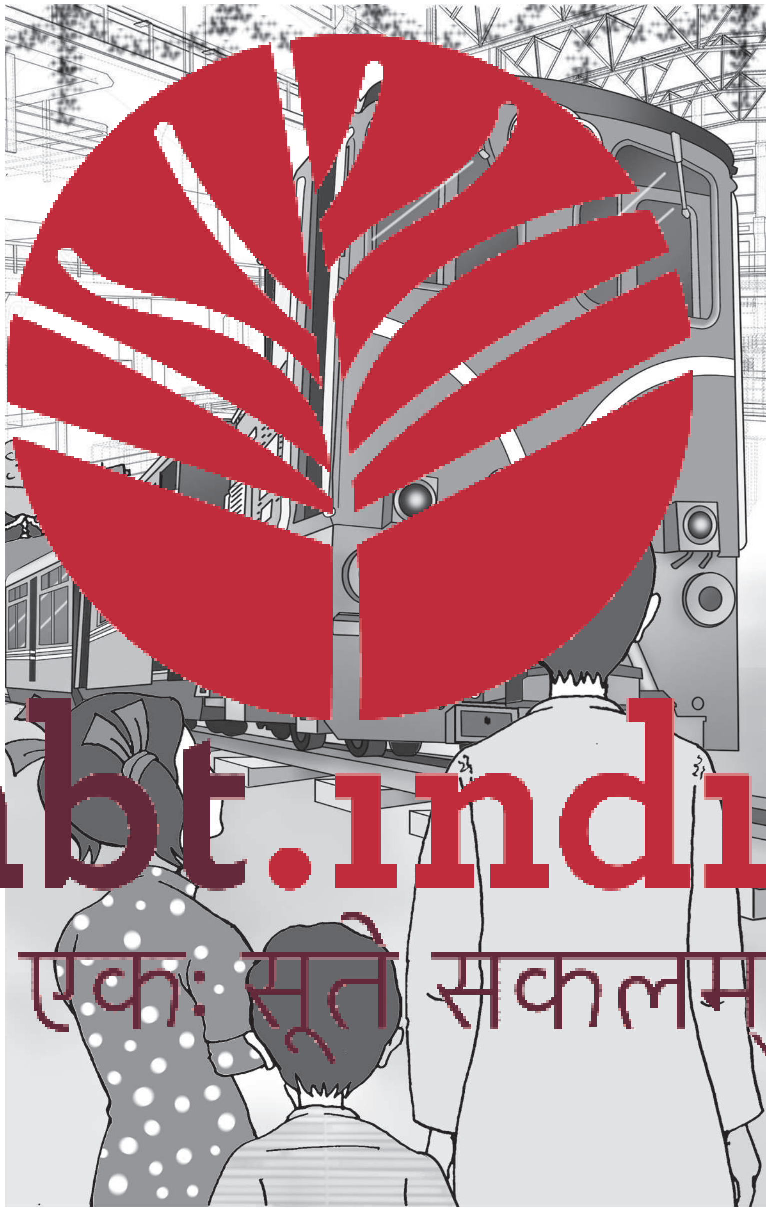
पर यह सब वे दूर से देख पाते थे। आम दिनों में कर्मचारियों के अलावा

किसी को भी कारखाने में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी। विश्वकर्मा

पूजा पूरे वर्ष का एकमात्र ऐसा दिन है, जब आमजन भी कारखाने में घूम

सकते हैं। आकाश बादलों से ढका है। विदा होते मानसून की ठंडी हवाओं

ने मौसम को खुशनुमा बना रखा है। कारखाने में जाने के लिए पाँच प्रवेश



द्वार हैं—जी.एम. ऑफिस गेट, टैक्सन मोटर गेट, टाइम ऑफिस गेट, वर्क ऑफिस गेट और रामकृष्ण गेट। पापा बच्चों को टैक्सन मोटर गेट से लेकर गए। प्रवेश [illegible] खड़े थे। आज उनके नजदीक [illegible] सका। सबकी नजरें [illegible] ड़ाकर धीरे से उस[illegible] पड़ी। यह दे[illegible]

[illegible] खाने के [illegible] वर्कशॉप [illegible] पापा यहाँ चार्जमैन हैं। पुट्टा [illegible] पि, शॉप म[illegible] तो क्या [illegible] कोई दुकान [illegible] जाते हैं? पर [illegible] लनुमा जगह पर आ[illegible] ने [illegible]। यह दरअसल बहुत बड़ा [illegible] कभी नहीं देखा था। हॉल में ऐसे चार [illegible]

[illegible] खूब बड़ी भारी दिखती अनगिनत मशीनों का जंगल-सा लग रहा था यह [illegible]। रेल की पटरियाँ [illegible] प्रांगण [illegible] तक [illegible] दिख रही थीं [illegible] में भारी-भरकम क्रेन थी। [illegible] चीज को आँखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे। एक कोने में रंगीन साड़ियों का छोटा-सा पंडाल बना था। पंडाल में विश्वकर्मा देवता की मूर्ति थी। वहाँ खड़े लोग दर्शनार्थियों को प्रसाद थमा रहे थे। प्रसाद लेकर टुट्टू-पुटी पापा के साथ आगे बढ़ गए। वहाँ कतार से कई इंजन लगे थे। पापा, बच्चों को एक हरे रंग के इंजन के सामने लेकर गए। स्टेशन पर चीखते-चिल्लाते इंजनों के विपरीत ये इंजन बिलकुल चुप और खामोश थे। ऊँचाई पर होने के कारण उसके पायदान तक सीढ़ी लगी थी।

"यह इंजन कितना चुप है न पापा?"

उसे देखते हुए टुटु बोला। शायद उसे यह सुस्त-सा चुपचाप खड़ा इंजन अच्छा नहीं [illegible]

"हाँ [illegible], [illegible] पू[illegible] नहीं [illegible] इ[illegible] चुपचाप है!" पापा ने हँस[illegible]

[illegible] सी[illegible] वह [illegible] भीतर [illegible] एक छोटे क[illegible] जैसा [illegible] और [illegible] कई यंत्र [illegible] रहे थे [illegible]

[illegible] यह [illegible] है, तो [illegible] सोचो [illegible] क्यों रुक जाती है पापा?" पुट्[illegible] [illegible]

[illegible] तो ड्राइवर [illegible] पर [illegible] यात्रियों की सुवि[illegible] यहाँ [illegible] अभी पूरी तरह न[illegible]

पापा [illegible] नीच[illegible] हुए कहा।

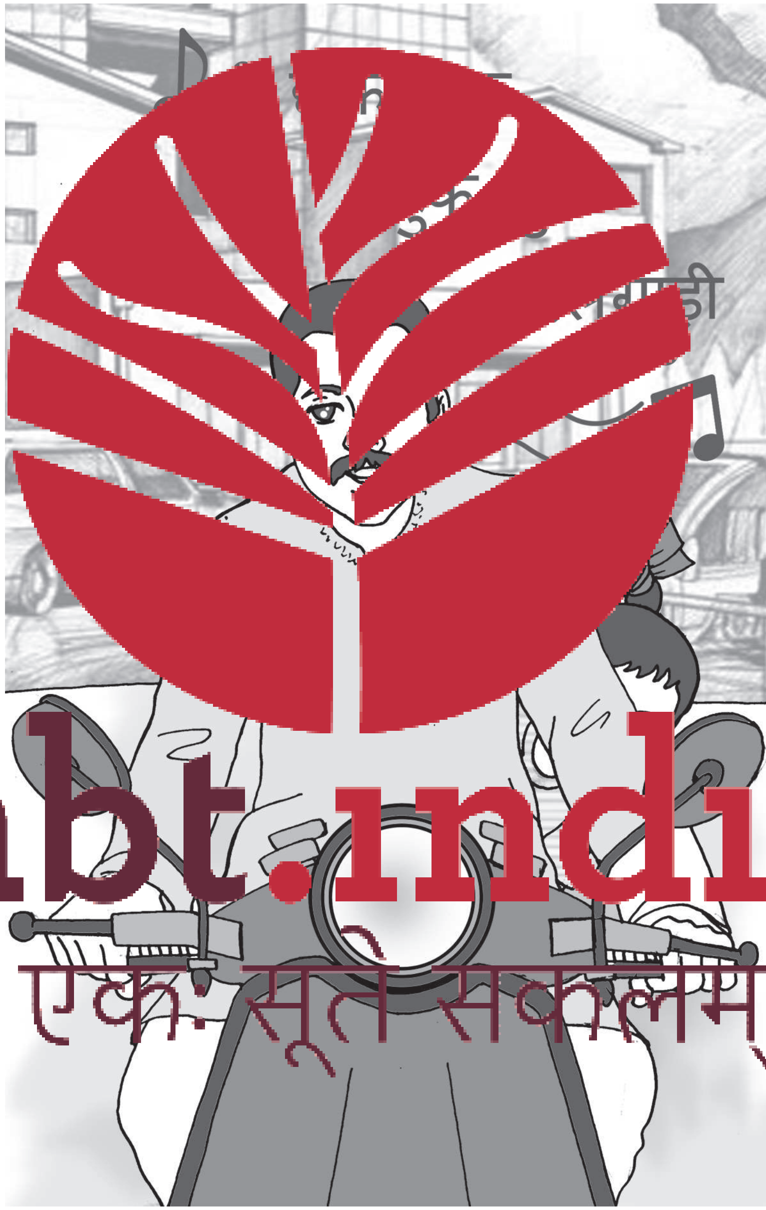
"यह पाइप ट्रे[illegible] प[illegible] जुड़ा होता है। इसमें हवा भरी होती है। 'चेन पुलिंग' होने पर उस डिब्बे के पाइप से हवा निकल जाती है। हवा [illegible] से [illegible] या पहिए [illegible] गति [illegible] उ[illegible] जात[illegible]।"

"ड्राइ[illegible] क[illegible] अकेला रहता है यह[illegible]?" टु[illegible] ने [illegible]लीवर [illegible] उँगलियाँ फेरते हुए पूछा।

"नहीं, उसका सहायक भी साथ रहता है।"

पहली बार इंजन को भीतर से देख टुटु-पुट्टी बहुत रोमांचित थे। वे एक-एक चीज गौर से देख रहे थे। पुट्टी सोच रही थी कि वो ये बातें पूजा से जरूर बताएगी।

"इतना बड़ा इंजन, पापा अकेले कैसे बनाते हैं?" टुटु ने पुट्टी से फुसफुसाकर कहा। वह अब तक अचंभित था।



पापा ने उसकी बात सुन ली। वे हँसते हुए बोले—

“नहीं भाई! यह अकेले आदमी के वश की बात कहाँ है?”

फिर उन्होंने [illegible]

“यह [illegible] वर्कशॉप कारखाने में हैं। [illegible] अलग-अलग हिस[illegible]

“इस [illegible] बना है [illegible]?” [illegible] गोल पड़े।

“यह [illegible] नहीं बन[illegible] है। जब [illegible] तैयार [illegible] है, तो [illegible] कर यहाँ लाते हैं। उसे जोड़त[illegible] पटरियों पर [illegible] उनका [illegible] या जाता है [illegible] से काम [illegible] रहा [illegible] नहीं। [illegible] रह गई।

[illegible] पटरियाँ बिछी [illegible] न पर बिछी होती है[illegible]

“यह [illegible] है? [illegible] ने का प्रयास करते हुए टट्टू ने पूछा।

“अभी ज्यादा लंबी नहीं हैं। इलेक्ट्रिक इंजनों के परीक्षण [illegible] असुविधा होने [illegible] इस [illegible] ‘कारखाना [illegible] ना रहा [illegible]।”

बात करते हुए वे पटरियों के साथ-साथ शॉप से बाहर चले आए। बाहर निकलने पर सूरज की तेजी का एहसास हुआ। बादल छँट जाने से धूप खिल [illegible] गई थी, लेकिन जगह-जगह शीशम व [illegible] पेड़ों की छाँह से राहत थी।

कुछ दूर चलने के बाद पापा ने इशारा करते हुए कहा...

“उधर सात और आठ नंबर वर्कशॉप हैं। सात को ‘लाइट मशीन शॉप’ कहते हैं। यहाँ हलकी और छोटी मशीनें रखी हैं। आठ को ‘हैवी

मशीन शॉप' कहते हैं। उस शॉप में बड़ी और भारी मशीनें रखी जाती हैं। वहीं स्टील फाउंड्री में पहियों की ढलाई होती है।"

यह सुनक [illegible]

"चि [illegible]

[illegible] बात कहकर पाप [illegible] था वापस ज [illegible] धूप-छाँह [illegible] झुरमुटों में [illegible] उसका चमकता [illegible] इंजनों से [illegible] जैसे इंजन [illegible] ऊपर गोल चिम [illegible] पुट्टी उसे अच्छे [illegible]

"यह [illegible] प्रयोग में नहीं है।" बच्चों को उत्सुक दे [illegible]

"क्यों प्रयोग नहीं होते? कितना सुंदर तो है यह!" पुट् [illegible] को इंजन बहुत [illegible]

"देखो [illegible] 26 जनवरी, 1950 को [illegible] गणतंत्र घोषित हुआ। उसी दिन से इस फैक्ट्री में उत्पादन प्रारंभ हुआ।"

बच्चे पापा की बात सुन रहे थे।

"सबसे पहले यहाँ भाप से चलने वाले इंजनों का उत्पादन होता था। इंजन की भट्टी में कोयला जलने पर जो भाप उत्पन्न होती थी, उसके दबाव से इंजन चलता था। इंजन के ऊपर वह गोल चिमनी देख रहे हो न...वहीं से धुआँ निकलता था।"

"फिर?"

"फिर 1973 में भाप के इंजन बनना बंद हो गए। उनसे तेज चलने वाले डीजल इंजन का उत्पादन शुरू हुआ।"

"जैसे हमा[illegible] पे[illegible]?" पुट्टी को सब बड़ा दिलचस्प [illegible] रह[illegible]

[illegible] 19[illegible] डीजल [illegible] उत्पादन भी बंद हो [illegible] हाँ [illegible] ट्रैक [illegible] इंजन [illegible] बिजली [illegible] वाले इंजन ब[illegible] हैं।

"भला [illegible] में [illegible] ट्रेन चल[illegible] [illegible] थी।

"वस[illegible] कार [illegible] पंखे [illegible] या तुमने ट्रे[illegible] से पार [illegible] बिज[illegible] के खंभे [illegible]

[illegible] ज्या[illegible] एक जटिल यंत्र होता है। इस[illegible] हैं। [illegible] से जुड़कर बिजली को इंजन तक पहुँचा[illegible] बोतल में लगी स्ट्रा जूस को तुम्हारे मुँह में पहुँचाती है!"

[illegible] पुट्टी पापा [illegible] सारी [illegible] उन्हें यह सब जानना रोमांचक [illegible] था। [illegible] यह [illegible] समझ ही गए थे कि इंजन बनाना बेहद मेहनत और जटिलता से भरा काम है। तब ही तो लोग सुगमतापूर्वक दूर-दूर की यात्राएँ कर पाते हैं। पापा के साथ चलते हुए पुट्टी ने मुड़कर इंजन को देखा। शान से खड़ा यह भारी इंजन पुट्टी को देखकर मुस्कराया। उसने आगे बढ़कर आहिस्ता से इंजन को छुआ। यह मानव का गर्व भरा अतीत था जहाँ से चलकर वह आज यहाँ तक पहुँचा है।

"फिर आना।" बंद आँखों से इंजन फुसफुसाया था।

"जरूर आऊँगी। तुम्हारा शुक्रिया।" विदा में हाथ हिलाते हुए वह धीरे से बोली।

यह एक [illegible] बैलून, गेंद, पजल वगैरह मेले से ख[illegible] थी। उसने एक नई ब[illegible] उसे अपना-सा लगे[illegible] अच्छी ब[illegible] के स्कूटर [illegible]

[illegible] छुक [illegible]

[illegible]री-भर[illegible]

[illegible] हे ड़ि[illegible]

[illegible]त्रों [illegible]

के[illegible]

प[illegible]चम बंगा[illegible] जिल[illegible] है वर्ध[illegible]मान [illegible] छोटा-सा श[illegible]। चित्तर[illegible] से झारखं[illegible]गती है। झार[illegible] चि[illegible] दोनों राज्यों के बीच [illegible] न[illegible] गाँव हैं— गंगा सोला, फुटबा[illegible]नप[illegible], नदी पार के गाँव 'वे[illegible]हाड़ी' की रहन[illegible]। [illegible]ड़िया जनजाति की [illegible]हिला है। पहा[illegible]या जनजाति का अपना इतिहास है। दो-ढाई सौ साल प[illegible] राजमहल की [illegible]ड़[illegible] के [illegible] घने जंग[illegible] में प[illegible]ड़िया [illegible]ोग [illegible] वे सीधे [illegible]ादे [illegible] श प्रवृ[illegible] के [illegible] थे। [illegible] ए[illegible] ज[illegible] टिक[illegible] नहीं [illegible]ह पाते थे। जंगलों से खाने के लिए वे महुआ के फूल व फल इकट्ठे करते। जंगली [illegible] से बेर चु[illegible]। कुदाल उनके [illegible] जीवन का प्रतीक है। जंगल की जरूरत भर जमीन साफ करते। झाड़ियाँ व पेड़-पौधे काटकर हटाते थे। घास-फूस जलाने के पश्चात जमीन साफ हो जाती। कुदाल से जमीन का साफ टुकड़ा खुरच-खुरच कर वे उसमें दालें व बाजरे की खेती किया करते थे। वे अपने झोंपड़े इमली के ऊँचे व मजबूत पेड़ों के बीच बनाकर रहते थे। कुछ वर्ष वहाँ खेती करने के बाद वे उस जमीन को



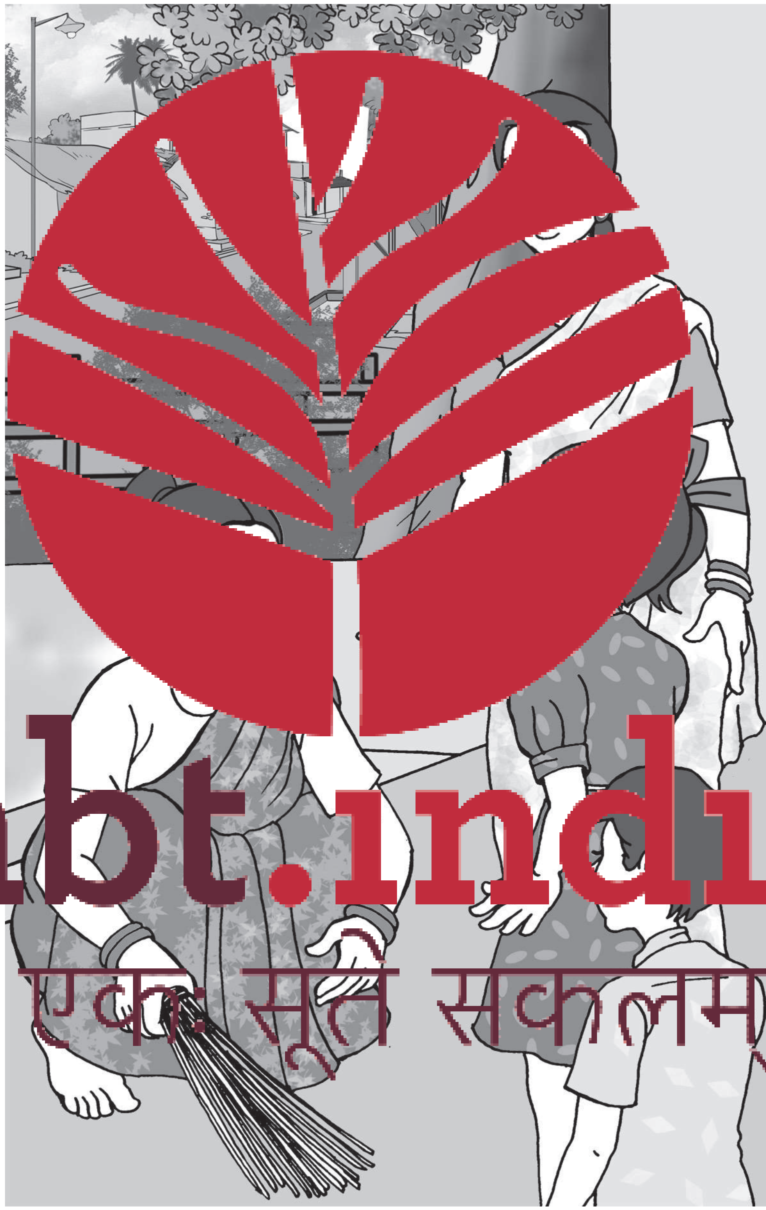
परती छोड़कर जंगल के दूसरे हिस्सों में चले जाया करते थे। इससे छोड़ी हुई जमीन में फिर उर्वरता उत्पन्न हो जाया करती थी। वे अपने जीवन में खुश व मगन थे [illegible] लेकिन ब्रितानी सरकार को पहाड़िया [illegible] नहीं भा रहा था। अंग्रेज [illegible] टिककर खेती करें [illegible] कर के रूप में [illegible] जगह टिककर कैसे [illegible] अधिकारी [illegible]

दूसरा [illegible] जंगलों के [illegible] इमारती लकड़ि[illegible] के जंगलों में घु[illegible] कब्जा जमा लिया। [illegible] दोहरी मार से पीड़ित पहाड़[illegible] ओर भागना पड़ा। कुदाल जहाँ पहाड़िया[illegible] का प्रतीक था वहीं संथाल जनजाति कृषि के लिए हल का प्रयोग करती थी। हल और कुदाल के बीच [illegible] खींचा। पहा[illegible] जनजाति खे[illegible] लगे थी। [illegible] जमीन के अ[illegible] में पहाड़िया लोग घुमंतू जीवन त्यागकर वहाँ आस-पास बसते चले गए।

नदी के इस पार चित्तरंजन में भी कई ऐसे मोहल्ले हैं... फतेहपुर, आ[illegible]लाडी, सिमजुड़ी, एस.पी. नाथ, गड्[illegible] कॉलोनी, [illegible]पिवेल कॉलोनी इत्यादि। पुट्टी फतेहपुर मोहल्ले में रहती थी।

बासंती शुद्ध बांग्ला नहीं बोलती। बांग्ला और नागपुरी भाषा का मिला-जुला स्वरूप होता है। जैसे...

"काज टा होंईगेछे।"



"तेल टा पेइंगेछी।"

बासंती के भूरे बालों में [illegible] चमक है। वह बालों के ऊपर कसकर जुड़ा [illegible] बासंती से बहुत स्नेह था। बासं[illegible] थी। वह बहुत मेहनती [illegible]

[illegible] में [illegible] री में लगी थी [illegible] उसकी [illegible]

[illegible] है [illegible] कर पूछा।

"मम्मी [illegible]"

[illegible] के बार [illegible] टुटु पास खिस[illegible]

मम्मी [illegible] कर बासंती खुश हो गई। टुटु और पुट्टी [illegible] थे [illegible] के गाँव घूमने का मौका जो [illegible] लने वाला था।

[illegible]नगल [illegible]ली

पु[illegible]र से नद[illegible] किलो[illegible] दूर थी[illegible] पार डेढ़ कि[illegible] वासंती का [illegible] छोटा-मोटा जंगल [illegible]देर [illegible] जब वे जंगल की ऊँची-न[illegible]ढ़[illegible]ड़ की शाखाओं पर बैठे बंदर देखे। कु[illegible] से [illegible]र उछल रहे थे। मम्मी ने धीर[illegible] कहा था—

“[illegible] शोर [illegible] चुपचाप [illegible]ते र[illegible]”

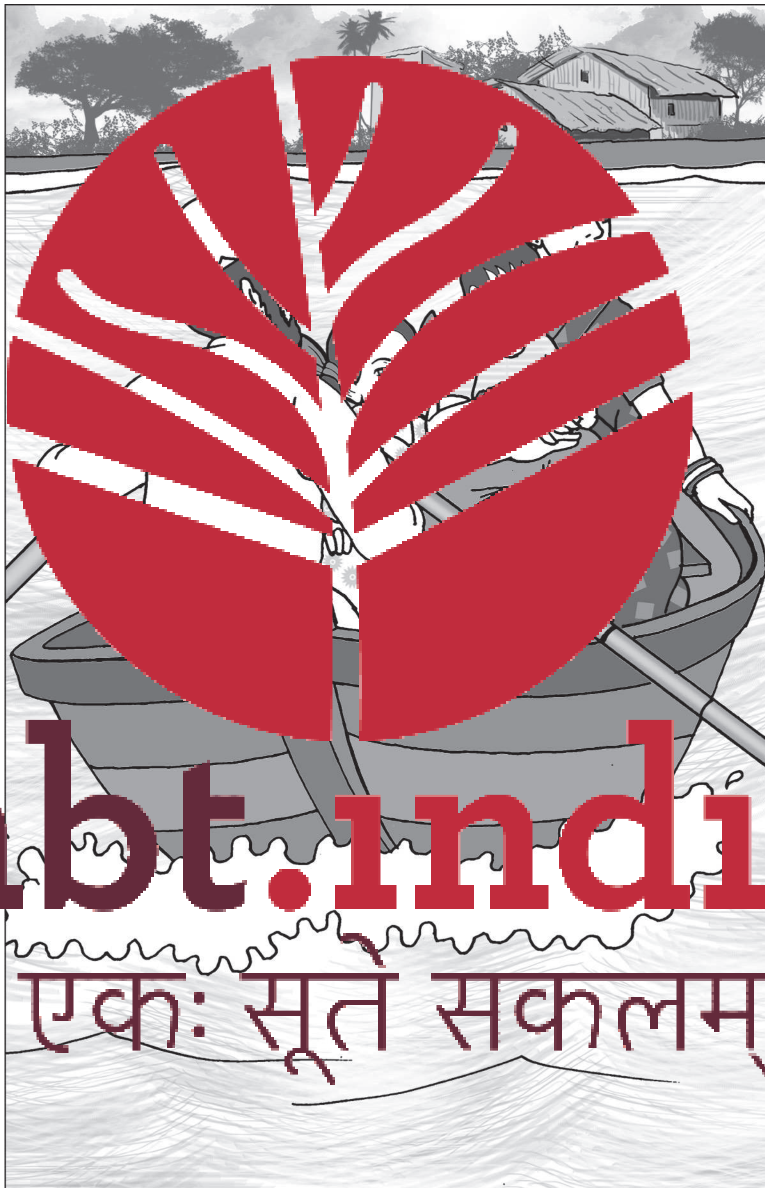
यह [illegible] [illegible]ट्टी का इला[illegible] था [illegible] कौवे काँव काँव [illegible] रहे [illegible]। कहीं [illegible]ाते [illegible] झुंड [illegible]खाई [illegible] [illegible] [illegible] करते एक दूसरे [illegible] लड़-भिड़ रहे थे...।

सहसा एक लोमड़ी उछलती हुई उनकी नजरों से ओझल हो गई। जंगल के बाहरी हिस्से में जलेबी जैसे दिखने वाले फलों के कई पेड़ थे। टुटु ने मम्मी से पूछा—

“ये कौन-सा पेड़ है मम्मी जिस पर जलेबियाँ फली हुई हैं।”

मम्मी मुस्कराई। फिर उन्होंने टुटु की ओर देखते हुए कहा—





"इस पेड़ के फल जलेबी जैसे दिखते हैं इसलिए इसे जंगल जलेबी कहते हैं।"

"तो इसमें [illegible] जलेबी जैसा!" टुटु ने बड़े उत्साह से [illegible]।

[illegible] नहीं होता।"

[illegible] था।

"अपने [illegible] होते हैं।"

"पर [illegible] चटपटा-सा [illegible]

"हाँ [illegible] 'इमली' भी [illegible]

[illegible] का गुच्छा तोड़ [illegible] और पुट्टी ने जंगल जलेबी [illegible] की तरह स्वादिष्ट तो नहीं थी, पर [illegible] अंदर मटर के जैसे अंडाकार छोटे-छोटे बीज थे।

[illegible] नदी [illegible] पास पहुँच [illegible] थे [illegible] हुई [illegible] बह [illegible] अब वहाँ पानी की [illegible] नदी [illegible] एक ओर पर बाढ़ में बह गए पुल का मलबा अटका पड़ा था। नदी के बीच में एक नाव थी। नाव किनारे की ओर आ रही थी। मम्मी टुटु-पुट्टी का हाथ थामे धीरे-धीरे ढलान से उतरीं। अब वे बालू के मैदान में खड़े थे। मम्मी की देखा-देखी टुटु-पुट्टी ने भी अपनी चप्पलें उतारकर हाथों में थाम लीं। बालू सूखा और ठंडा था। थोड़ी दूर चलने के बाद वे पानी तक पहुँचे। पानी शांत और पारदर्शी था। पारदर्शी पानी के तल में पड़े रंग-बिरंगे पत्थर व तैरती मछलियाँ स्पष्ट दिख रही थीं। दोनों ने उन मछलियों को पकड़ने

की भरसक कोशिश की, पर वे हाथ न आईं। वे कुछ देर तट के पानी और मछलियों से खेलते रहे। नाव किनारे आ लगी थी। लोग चढ़ रहे थे। टुटु-पुट्टी सावधा[illegible] नाव पर बैठे। नाव दूसरे किनारे की [illegible]र

[illegible]

[illegible]-का[illegible]

ना[illegible] पर आ लगी[illegible]। न[illegible] से नदी [illegible] के लिए बड़ा[illegible] के साथ[illegible] से उतरे। किनारे [illegible] थे।

नदी के[illegible] ब[illegible]तरे पर दो प्रतिमाएँ थीं। कंधे पर धनुष-[illegible]ये [illegible]कन्हीं योद्धाओं की लग रही थीं। नीचे उनके नाम लिखे थे। पुट्टी ने अक्षरों को मि[illegible]-मिलाकर पढ़ा[illegible]...सिद्धू-का[illegible]

नदी [illegible] जल कल-क[illegible] बहे [illegible] रह[illegible] था[illegible]लकी [illegible]प मे[illegible]त के सुनहरे कण दूर से चमक रहे थे। तेज हवा ने चिलबिल को झकझोर दिया [illegible]। ऊऊऊऊ। पीली-भूरी पत्तियाँ जमीन पर फैल गईं। चबूतरा भी सूखी पत्तियों से भरा था। टुटु-पुट्टी देर तक उन आदमकद प्रतिमाओं को निहारते रहे। प्रतिमाएँ कितनी सजीव प्रतीत हो रही थीं।

"सिद्धू-कान्हू कौन थे मम्मा?"

पुट्टी मुग्ध भाव से उनके धनुष-तीर व भाव-भंगिमाएँ निहारती पूछ बैठी।



"सिद्धू-कान्हू दो वीर भाई थे जिन्होंने ब्रितानी सरकार के अत्याचारों के खिलाफ विद्रोह किया था।"

दुपट्टे से [illegible] थकी-थकी सी लग रही थीं। पर [illegible] तक नहीं था। वे सिद्धू-[illegible]

[illegible] ठ गई थी। [illegible] इतिहास [illegible] हो गए [illegible]

इतिहा[illegible] ोकों की [illegible] मानव की भूलों [illegible] के खिलाफ लड़ना [illegible] ड़ियों की कहानी है। पहाड़ियों [illegible] प्रदेश को संथालों की भूमि घोषित कर दिया [illegible] जनजाति थी। इंग्लैंड की ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार कर रही थी। उसने संथालों को यहाँ बसा[illegible]। उपज का [illegible] हिस्सा उन्हें कर के रूप में कंपनी को [illegible] था [illegible] कर वसूली को लेकर मनमानी बढ़ती गई। फसल अच्छी नहीं होने पर भी उन्हें कर देना पड़ता था।

मम्मी बच्चों को आगे बता रही थीं।

वहीं राजमहल की पहाड़ियों के पास एक गाँव है 'भगनाडीह'। भगनाडीह गाँव के लोग बहुत मेहनती थे। खेती करना, जानवरों और मुर्गियों को पालना उनका पेशा था। जंगल ही उनका घर था।



"क्या ऐसा ही जंगल?" नदी के पार जंगल को देखते हुए पुट्टी ने पूछा था।

टुटु गाल [illegible] खे [illegible]।

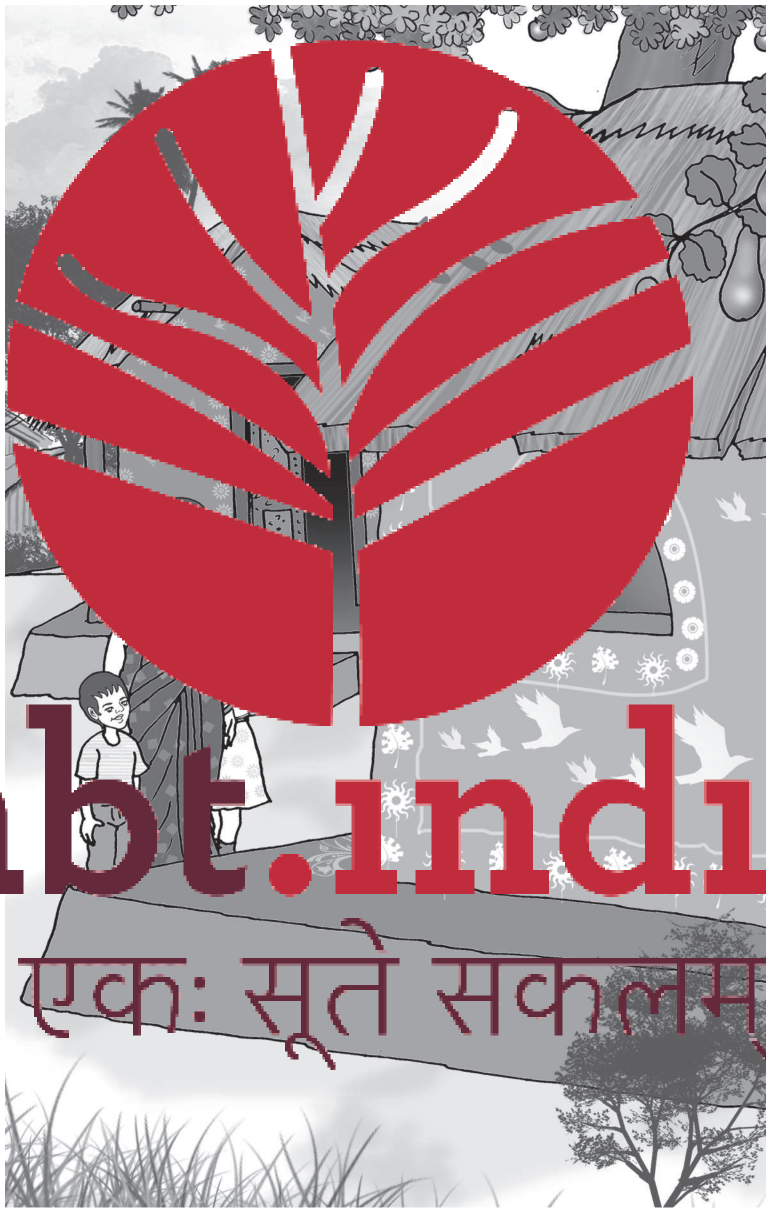
"नदी [illegible] स [illegible] ब [illegible] ग [illegible]

[illegible] लोग [illegible] प्रेमी [illegible] भाव के होते हैं। [illegible] । मतलब उ[illegible] पन [illegible] को दे देना [illegible] था। [illegible] पर [illegible] करते [illegible] आदिवासी [illegible] गाँव [illegible]-कान्हू [illegible] बहादुर भाई थे। [illegible] इंडिया कंपनी [illegible] संघर्ष [illegible] संथालों के [illegible] जोंगा है। [illegible] होती हैं। सिद्धू [illegible] को [illegible] कर न दें। सिद्धू ने [illegible] सपने में देवता ने कहा कि [illegible] और [illegible] का नाश हो।" इस संदेश को डुगडुगी पि[illegible] या गया। फलस्वरूप संथालों ने [illegible] देने से मना कर दिया। सिद्धू-कान्हू का नारा था, "अ[illegible]जों हमारी माटी [illegible] कं[illegible] के खिलाफ [illegible] ड़ते [illegible] से [illegible] शही[illegible] हो गए। चाँद-भैरव, सिद्धू-कान्हू को [illegible] सरेआम फाँसी दे दी गई। इस प्रकार सिद्धू-कान्हू, चाँद-भैरव चारों भाई सदा के लिए इतिहास में अमर हो गए।

कहानी खत्म हो गई थी। टुटु-पुट्टी गंभीर हो गए थे। मम्मी ने बच्चों की ओर देखा। इतने गंभीर तो वे कभी नहीं हुए। उन्होंने टुटु-पुट्टी को जल्दी चलने को कहा। बारसी उनका इंतजार कर रही होगी।

[illegible]

ब[illegible]तें करत[illegible]च्चे [illegible]ब माँ [illegible] केनप[illegible]हुँचे तब दो[illegible]ी थी। [illegible] के [illegible]ल से [illegible]। पेड़ों के बीच [illegible]जात[illegible] रास्ता था। रास्ता ल[illegible] ल[illegible]। रास्ते पर कुछ जंगली मुर्गे-मु[illegible]ध[illegible] रहे थे। गाँव काफी हरा-भरा और साफ-सु[illegible] रा[illegible]-पाँच घरों के [illegible] केनपहाड़ी यानी बासंती का [illegible]र था। घर के सामने बेल और अमरूद [illegible] पेड़ थे। बास[illegible] का [illegible]र [illegible]ट्टी का था। [illegible]धी [illegible] की दीवारें [illegible] छत [illegible]ल रंग [illegible] खपै[illegible] की थी। दीवारें चू[illegible] और [illegible]रे से [illegible]गी [illegible]ं। जि[illegible] पर [illegible]ले, पीले, लाल और सफेद रंगों से फूल और पक्षियों के सुंदर चित्र बने थे। लकड़ी के दरवाजे पर नक्काशी करे फूल पत्तियाँ और डिजायन बनाई हुई थी। टुटु-पुट्टी ने ऐसा दरवाजा अपनी रेलवे कॉलोनी के किसी घर में नहीं देखा था। उस दरवाजे के ठीक सामने मालती और लौकी की लताएँ थीं। ऊपर खपरैल वाली छत से कुछ लौकियाँ सामने लटक आई थीं। मालती की लता पर लाल फूलों के गुच्छे हवा संग झूम रहे थे। दरवाजे के समीप ही घर की दीवार से लगा मिट्टी का लंबा चबूतरा बना था। मम्मी वहीं





बैठ गईं। टुटु-पुट्टी भी उनके साथ बैठे। मम्मी दीवार पर उकेरे चित्रों को दिखाने लगीं। पूरी दीवार को इस तरह से लीपा गया था कि गोल-गोल सुंदर डिजाइन ब[illegible] बनाए थे। यह जानकर पुट्टी बह[illegible] पेंटिंग सिखाओगी न!" [illegible] लिए अमरूद का[illegible] वहीं बैठ ग[illegible] गोद में [illegible] सुंदर-सी [illegible] काले रंग का टीका [illegible] माथे पर खे[illegible]

[illegible] ने [illegible]रा।

ब[illegible]गी थी। उसके होठों से दूध [illegible]

"अभी-अभी [illegible] कहते हुए बासंती ने अपने आँच[illegible] से उसका मुँह पोंछ दिया।

टुटु[illegible] उसका [illegible] अपनी [illegible]र बच्चे हैरानी [illegible] आँखें मटकाती हँसती रह[illegible] नानी की गोद में [illegible]र पटकती वह थूक की बौछारों संग मुँह से पर-पर की आवाज कर रहा था।

बच्ची को खिलौने और तोहफे थमाकर जब वे वापस लौट रहे थे तब साँझ का सिंदूरी सूरज ताड़ गाछ के पीछे अ[illegible] था। नदी में उसका रंग धीरे-धीरे बह रहा था। पुराने पीपल पर अपने-अपने घोंसलों में पक्षी दुबक गए थे। टुटु के हाथ में थैला था जिसमें उसकी मनपसंद दो लौकियाँ मुस्करा रही थीं।

... पुट्... फ में ... उसके ... एक ...ँत हिल
रहा था। ... से ... टूटकर ...एगा...पर
नि...हीं। अटक ...में दर्द ... खाना ... दर्द बढ़
जाय... कल ... गी है। बैग
कंधे प... क... छूँट गया था।
हलकी-हलक...

वह सीधे रास्... पड़ी ... बाजार से गुजरते हुए उसने नाक पर हाथ रख लिया। चारों ओर मरी हुई मछलियों की ... फैली थी। दरअ... ऊँचे ... चबूतरे ... बीच ... ली ... हुत ...ना और विशाल पेड़ ...। पेड़ के नीचे आदमी और ... मछलियाँ ...ट बेचा करते थे। असंख्य मछलियाँ जिनकी आँखें खुली होती थीं। एक दुर्गंध चारों ओर फैली रहती। पर पुट्टी जानती है कि अब वे पानी में तैरने वाली मछलियाँ नहीं रहीं। वे ... चुकी हैं। इसे देखकर पुट्टी ... ने लगता। वह इस सीधे रास्ते से आना-जाना कभी नहीं करती। नाक पर हाथ रखकर पुट्टी जब बाजार से पार हो रही थी तो उसने शर्मा अंकल को देखा। वे मछली खरीद रहे थे। कुछ दिनों पहले पुट्टी के घर चाय पीते हुए उन्होंने पापा से कहा था।



“गाय इतना उपयोगी पशु है। उसे नहीं मारना चाहिए।”

पुट्टी को नदी में तैरती [illegible] चंचल मछलियों की याद आई। मजे से उछलती, पानी [illegible] वे [illegible] वह दुख से भर उठी। उसने पल[illegible]

[illegible] जानवर हो या छो[illegible]

[illegible] एँ खत्म [illegible] हैं। लोग [illegible] तैयारि[illegible] में दुर्गा पूजा की [illegible] छुट्टियाँ होंगी [illegible] ने उसे खि[illegible] दिखाया। पूजा-प[illegible] बनना [illegible] लगभग 20 दिनों [illegible]

“[illegible] ली...?” पूजा ने पूछा। वह [illegible] कर रही थी।

“मम्मी ने कहा [illegible]गा।”

वे खिड़की से पूजा-पंडाल का बनना देखती रहीं। कुछ देर बाद मैम ने उन्हें [illegible] चलने को कहा। यह [illegible] ‘खेल[illegible]’ घंटा था।

पुट्टी की जीभ बार-बार उसके हिलते दाँत पर जाकर रुक जाती। ऐसा करने पर थोड़ा दर्द होता, पर मजेदार भी था। मैम ने बच्चों को स्कीपिंग रोप थमा दी। छोटे-छोटे झुंडों में बँटे बच्चे मनचाहे खेलों में सब व्यस्त थे। पुट्टी और पूजा रस्सी कूद रही थीं। [illegible] पुट्टी को कुछ अजीब-सा महसूस हुआ। उसने रस्सी पास में रख दी। जीभ से टटोला तो दाँत की जगह खाली थी। अलबत्ता मुँह में कुछ था। उसने हथेलियों पर दाँत उगल दिया। खून से सना वह एक नन्हा दाँत था। पुट्टी थोड़ा डर गई। तभी पूजा ने कहा—



"तुम्हारा दूध का दाँत टूट गया!"

'दूध का दाँत?' पट्टी हैरानी से हथेली पर रखे दाँत को देख रही थी।

"हाँ [illegible] दाँत टूटने पर बच्चे बड़े हो [illegible]

[illegible] यह मसूड़े में [illegible] लगा [illegible]।

"चलो [illegible]।" पूजा [illegible] कहा।

"क्या [illegible] थी। पर पू[illegible] मजबूर [illegible] जाना प[illegible]

[illegible]।" [illegible] कम्युनिटी हॉल के [illegible] यहाँ [illegible] पूजा ने कुएँ के पास की घास [illegible] पट्टी ने मुट्ठी में बंद अपना नन्हा दाँत वहाँ [illegible]।

"मैंने भी अपना दाँत यहीं गाड़ा था।" पूजा ने धीरे से पु[illegible] के कान में [illegible] थी कि [illegible] उसके [illegible]

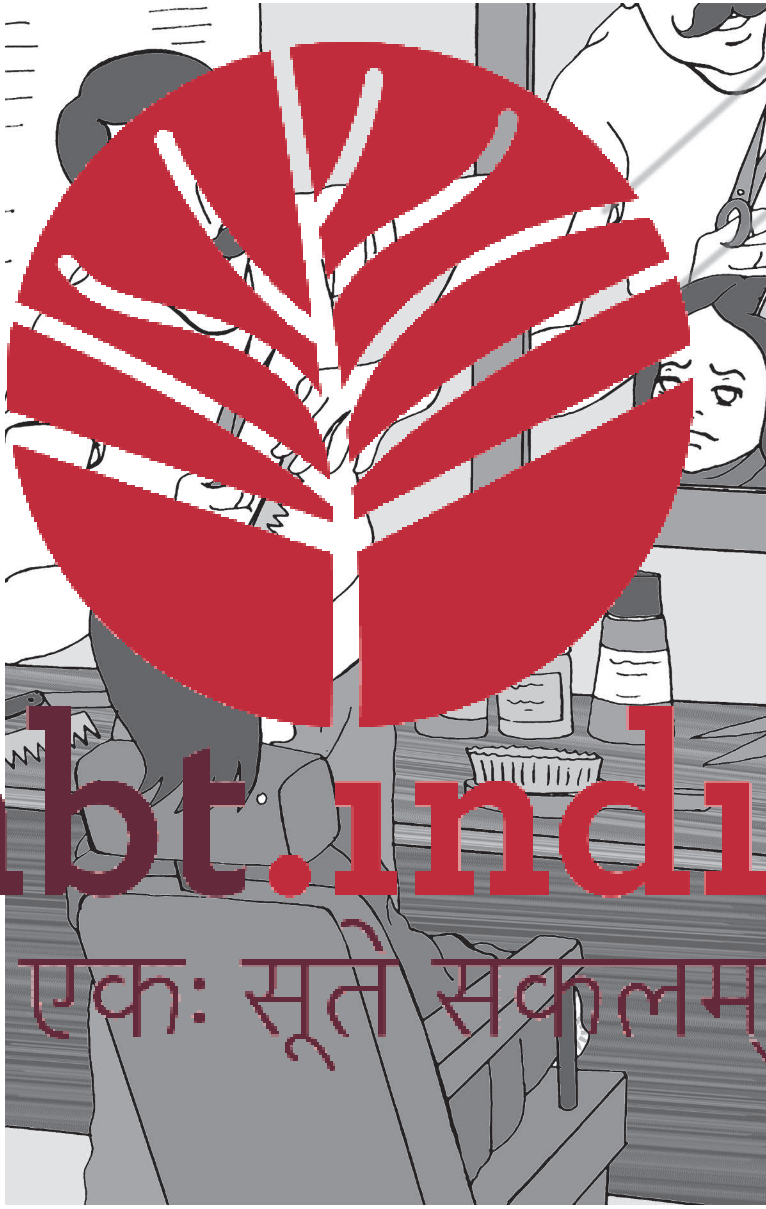
[illegible]

ब[illegible] कटवाना [illegible] बेह[illegible] उबाऊ [illegible]। अ[illegible] कटवाते हु[illegible] थी, लेकि[illegible] अ[illegible] बात [illegible]। क्लास में क[illegible]न [illegible]ख पुट्टी को भी चोटि[illegible] ह[illegible]चाहती थी। उसे लगता कि चो[illegible]नि[illegible] इस बार वह जिद पर अड़ी थी कि बाल नहीं [illegible]गी [illegible] के यह कहने पर कि बाल ज्यादा छोटे नहीं किए जाएँगे। वह मान गई थी।

[illegible] बाल नहीं [illegible]गी।

[illegible] कमर [illegible] ह[illegible] जमाए उसने फैसला सुनाया था।

रविवार होने के कारण सैलून पर भीड़ थी। बच्चों को सैलून के बाहर बेंच पर [illegible] पापा [illegible] अंकल से [illegible] गए। सैलून असल में एक छोटा-सा कमरा था। कमरे के आमने-सामने की दीवारों पर दो बड़े आयताकार शीशे लगे थे। कुछ पोस्टर्स व कैलेंडर भी दीवारों पर चिपके थे। कमरे में चार कुर्सियाँ थीं। कुर्सियों की सीट पर रैक्सीन का काला गद्दा था। एक कुर्सी के हत्थों के बीच लकड़ी का चौड़ा पटरा लगा था। वह कुर्सी बच्चों के लिए थी। थोड़ी देर बाद पुट्टी की बारी



आई। पटरे पर बैठकर वह आईने में देख रही थी। सामने आईने में सीट के पीछे वाला आईना दिख रहा था। पुट्टी एक साथ अपना चेहरा और अपने पीछे के [illegible] पीछे वाले आईने के अंदर एक और [illegible] उसमें भी आईना। उसमें [illegible] आईने में पुट्टी। [illegible] पुट्टी [illegible] अंकल ने [illegible] पड़ा पुट्टी के [illegible] तरफ [illegible] अब [illegible] का सिर्फ [illegible] को गीला [illegible] धीरे [illegible] पीछे [illegible] कान के [illegible] रेंगने के कारण [illegible] लगीं [illegible] तीन [illegible] की ओर खींच [illegible] पर [illegible] सचेत हुई। सिर [illegible] गर्दन के पीछे से कोई बोझ [illegible] खुश हुई थी। पर जैसे ही उसकी नजर [illegible] गायब हो गई [illegible]।

आँ....! यह क्या?

[illegible] पीछे इधर-उ[illegible] देख [illegible] बालों [illegible] बिख[illegible] थे। [illegible] आईने में देखा। [illegible] छोटे-छोटे [illegible]! पुट्टी को रोना आ गया। उसे अपने कंधे तक लंबे बाल याद आए। चोटियाँ न सही, पोनी तो बन ही जाती थी। पर अब? चेहरा भी कितना बदला-बदला सा लग रहा था।

"आपने इतने छोटे क्यों किए मेरे बाल?" पुट्टी ने रुआँसे स्वर में पूछा।

"तुम्हारे पापा ने कहा था बिटिया।" नाई अंकल उसकी गोल-गोल आँखों में आँसू देखकर सहम गए।

अब पुट्टी को पापा पर गुस्सा आया। उसने रास्तेभर उनसे बात नहीं की। घर पहुँचकर उसे पापा ने बुलाया तो वह मुँह फुलाए चुपचाप उनके सामने जाकर खड़ी [illegible]

"तुम्[illegible] ब[illegible] अच्छे [illegible] ग[illegible] पा[illegible] पुट्टी की हथेलियाँ थामक[illegible] पुट्[illegible] नहीं बो[illegible]

[illegible] कर [illegible] होता [illegible] पापा के [illegible] पर उसने धी[illegible] हा[illegible]

"[illegible] क्यों?" [illegible] बार [illegible]

"[illegible] क्योंकि तु[illegible] छोटे [illegible] साफ-सफाई नहीं [illegible] जब [illegible] बड़ी [illegible] अपने [illegible] को साफ अ[illegible] रख पा[illegible] खूब [illegible] रख[illegible] ल रखने पर [illegible] की साफ-सफाई में [illegible]!" कहकर पापा [illegible]

पुट्[illegible] बातें [illegible] समझ में आ रही थीं। पर वह चु[illegible]

"पता है इस स्टाइल [illegible] क्या [illegible] है?"

अब पुट्टी [illegible] पापा को ध्यान से देखा था। पापा गंभीर [illegible] रहे थे। मजा[illegible] क्या [illegible] कुछ नहीं।

"इसे [illegible]टोरी कट क[illegible] हैं।"

"कटोरी कट", पुट्टी धीरे से बुदबुदाई। यह शब्द उसे सुनने में अ[illegible] लगा था।

पापा ने उसे आईने के सामने खड़ा कर दिया। कंघी से धीरे-धीरे बड़े प्यार से उसके बालों को संवारने लगे। फिर उसके बालों में नया गुलाबी हेयर बैंड लगा दिया। सामने माथे पर झूलते सीधे बाल (जो आँखों से काफी ऊपर ललाट तक ही थे)। एक बराबर गोलाई में कटे बाल सचमुच ऐसे दिख रहे थे जैसे सिर पर बालों की कटोरी औंधी रख दी गई हो।



उसने आईने में ही पापा को देखा। पापा मुस्करा रहे थे।

दूसरे दिन स्कूल जाने से पहले वह रानी के पास गई। उसने स्कार्फ खोलकर रानी से [illegible]

"देखो [illegible] त

[illegible] टु [illegible] देखती [illegible] दुबा [illegible] कर पुट्टी दौड़ पड़ी [illegible] प [illegible] ल [illegible] बैग में [illegible] बें, बॉक्स, टि [illegible] एक [illegible] र ब [illegible] थे।

ढबर [illegible] ढबर

[illegible] क ध [illegible] छाया [illegible] सर [illegible] म नहीं आए थे। सब बच्च [illegible] दु [illegible] कुछ बालों [illegible]। पुट्टी ने [illegible] कर डेस्क [illegible] लि [illegible], लेकिन [illegible] भी उसके बाल [illegible] थो [illegible] लाश सर के आने प [illegible]। [illegible] कर सर हाजिरी लेने लगे। त [illegible] पुट्ट [illegible] उन्होंने क्लास के सभी बच्चों को देखा। [illegible] की [illegible] पर रखे पुट्टी के स्कार्फ पर पड़ी वे सारी बात समझ गए। उन्होंने मुस्कराकर कहा—

"[illegible] येयर [illegible] है पुट्टी?"

पुट्टी [illegible] हुई खड़ी हो ग[illegible]। उस [illegible] धीरे [illegible] क[illegible]—"हाँ [illegible] ये क [illegible] री कट स्टाइल है सर!"

"ओह! बहुत सुंदर मिस कटोरी कट!" सर ने हँसकर कहा।

फिर तो पूरी क्लास उस दिन पुट्टी को 'मिस कटोरी कट' कहकर बुलाती रही। पुट्टी यह सब सुनकर मन-ही-मन खुश होती रही। बाल छोटे हो जाने की नाजुक-सी चोट बुलबुले की तरह गायब हो गई थी।"

टुटु-पटटी को [illegible] और हॉरर [illegible] बहुत पसं[illegible] भी रात में [illegible]' और [illegible] आते [illegible] सामने से हिलते [illegible] मी-[illegible] से हमेशा मना कर[illegible] की बात भूलकर सीरियल्स देख[illegible] दिमाग और साहस से विशेष प्रभावित था। [illegible] चु[illegible] ही इंस्पेक्टर [illegible] अपराध की [illegible]त्थियाँ सुलझाकर अपराधियों को जेल में पहुँचा देता था। वह टुटु के लिए [illegible] से कम नहीं [illegible]ता। [illegible] हॉरर [illegible] नाट[illegible] के [illegible] दोनों बच्चे शो ख़त्म [illegible] के बाद [illegible] उस[illegible] अस[illegible] से नहीं निकल पाते। उन्हें अकेले आँगन में जाने तक से डर लगता था। मम्मी-पापा को उठाने से डाँट पड़ती सो अलग, टीवी देखना भी बंद करा दिया जाएगा। फिर बहुत सोचने के बाद बच्चों ने इस डर से बचने का एक तरीका ढूँढ़ निकाला। दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए ही कमरे की लाइट ऑफ करते। लेकिन असली समस्या तो तब आती जब दोनों सू-सू करने के लिए जाते। सोने से पहले सू-सू जाने की आदत दोनों की थी। दोनों एक साथ तो जा नहीं सकते थे। लेकिन अकेले जाने का ख़याल



भी डरावना था। फिर इसका भी एक हल दोनों ने निकाला। पुट्टी पहले आँगन में जाएगी और टुटु बरामदे में खड़ा एक से सौ तक गिनती गिनेगा या गाने गाएगा। [illegible] उ[illegible] [illegible] मम्मी-पापा की नींद भी खराब न [illegible] और [illegible] की [illegible] [illegible]ती रहे। इस तरह दोनों [illegible] और [illegible] न के [illegible] बचे [illegible] के सू-सू करने के [illegible] में [illegible] पु[illegible] [illegible] रही [illegible]...आठ...नौ.

..[illegible] महसा [illegible] गी [illegible]।

"दीदी [illegible]" टुटु [illegible] भ[illegible] था।

[illegible] काट [illegible] झ टुट[illegible] दी [illegible] से पैर खुजलाती पुट्टी न [illegible]

[illegible] ही वापस [illegible] ग[illegible] था। [illegible] बंद करके सोने [illegible] लेकर [illegible]

[illegible] हत [illegible] मारे दीदी-दीदी चिल्ला रहा [illegible] ह

अगले दिन स्कू[illegible] के [illegible] पुट्टी बहुत खुश थे। उन्हें टुटु के [illegible]त की बर्थ डे पार्टी में जाना था। शाम होते ही दोनों [illegible] नए कपड़े पहने [illegible] [illegible] पहने टुटु [illegible] [illegible] क [illegible] [illegible]सरे [illegible]रे में [illegible] रहा था, तो पुट्टी परी [illegible]ला प्र[illegible]क प[illegible] इ[illegible] रही थी। [illegible]ने सुंदर कपड़ों पर वे स्वेटर पहनना तो कतई नहीं चाहते थे, पर माँ से डाँट खाकर मजबूरन उन्हें स्वेटर पहनना पड़ा। थोड़ी देर बाद माँ उन्हें अर्णव के घर छोड़ आई थीं।

अर्णव के घर खूब हंगामा मचा था। कमरा गुब्बारों और रंग-बिरंगे कंदीलों से सजा था। धीमा संगीत बज रहा था। बच्चे बर्थ-डे हैट्स पहने संगीत पर नाच रहे थे। टुटु ने आगे बढ़कर अर्णव को बर्थ डे विश करते हुए गिफ्ट थमाया। अर्णव ने टुटु-पुट्टी को भी बर्थ डे हैट्स पहना दी। सब

मिलकर नाचने लगे थे। पूरा कमरा संगीत और बच्चों की थिरकन से झूम रहा था। अर्णव के भैया और उनके दोस्त भी बच्चों के साथ नाचने लगे। वे लोग दसवीं में [illegible] हट के साथ रंग-बिरंगी कंदीलें भी [illegible] हवा में गुब्बारे भी मानो [illegible] में घुप्प अंधका[illegible] इमरजेंसी ल[illegible] अंधेरे में बच्चे शोर [illegible] चुपचाप [illegible] सकता था। तभी उसकी [illegible] बिजली के [illegible] किया जा सकता है [illegible]

[illegible] अर्णव ने फूँक मा[illegible] बच्चे तालियाँ बजाने लगे। [illegible] गूँज उठा। अर्णव ने सभी दोस्तों को [illegible] बाद बड़े लोग नाश्ते की तैयारी करने लगे। अँधेरे कमरे में बच्चों के साथ अर्णव के भैया और उनके कुछ [illegible] रहे थे। भैया [illegible] बच्चों [illegible] बातें सुनकर [illegible] थे। अर्णव ने टुटु-पुटु को बताया कि इस बार से खूब सारे गिफ्ट मिले हैं। कल स्कूल में वह बताएगा कि पैकेट्स के अंदर क्या-क्या था?

"वैसे भैया के पैकेट में क्या है वो तो मुझे पहले से पता है!" अर्णव ने मुस्कराते हुए कहा।

"क्या है?" टुटु ने उत्साहित होकर पूछा।

"इसमें डेमोन वाला वीडियो गेम है! आई एम द घोस्ट हंटर।"

टुटु चुप हो गया। उसे अर्णव से ईर्ष्या महसूस हुई। उसके पास अभी तक वही सीढ़ियाँ चढ़कर [illegible] प्वाइंट्स जमा करने वाला पुराना 'सुपर मारियो' है [illegible] अ [illegible] नहीं चाहता था। उसने तुरंत कहा [illegible]

[illegible] मैंने [illegible] मुच [illegible]

[illegible] खें [illegible] जना [illegible] गईं।

[illegible] र्णव [illegible] खकर [illegible]

"हाँ, [illegible] मैं एक [illegible] र [illegible] था [illegible] ने बगीचे [illegible] हँसने [illegible] वाज [illegible] यह [illegible] वाला [illegible] स्ट था। उसके नाखू [illegible] बड़े [illegible] अ [illegible] र से [illegible] नके पास च [illegible] हाँ जाकर [illegible] उसे [illegible] मुक्के [illegible] ...ढिशुम... बस [illegible] में भाग [illegible] रत'...'पृथ्वी का रक्ष [illegible] ने [illegible] मान में लहराते हुए कहा।

टुटु को डींगें [illegible] री [illegible] यह बात पुट्टी को बिलकुल भी [illegible] ंद नहीं। मम्मी ने कई बार समझाया था कि यह ठीक [illegible] दत नहीं। टुटु [illegible] बच [illegible] चाहिए। प [illegible] टु [illegible] है [illegible] नहीं [illegible] नता [illegible] अर्ण [illegible] के भैया दूर [illegible] यह [illegible] थे। वे उनके [illegible] स चले आए। उन्होंने बच्चों से पूछा—

"तुममें से किस-किस को अँधेरे से डर लगता है?"

कुछ बच्चों ने 'हाँ' में सिर हिलाया।

"और घोस्ट से?.... क्या तुम लोगों ने आत्मा को देखा है?"

भैया के इस सवाल पर ज्यादातर बच्चे खामोश रह गए। पुट्टी कुछ कहना चाहती थी कि टुटु और अर्णव ने एक साथ कहा—"नहीं, हमें डर नहीं लगता।"



"पक्का?" भैया के एक दोस्त ने दुबारा पूछ लिया।

"हाँ, पक्का।" बच्चों ने [illegible] दृढ़ता के साथ जवाब दिया।

"अच्छा तो [illegible]

'प्ला[illegible]ट [illegible] है [illegible] छो[illegible] [illegible] बात थी।

[illegible] य[illegible] रे[illegible] आ[illegible] [illegible]ा...हम किसी अच[illegible] [illegible]ला[illegible]

[illegible]च्च [illegible] ए। टुट-[illegible] मी[illegible] [illegible]यर [illegible] में एक [illegible] बो[illegible] [illegible]लिया ग[illegible] उ[illegible]क [illegible] पर [illegible] जला दी [illegible] अ[illegible] उसके [illegible] आ[illegible] [illegible] गए। [illegible]च बात तो यह था [illegible] [illegible]र-[illegible]-भी [illegible] डरे [illegible] [illegible]कन यहाँ स[illegible] डरपोक क[illegible] [illegible] मजर [illegible] से जेड' तक [illegible] [illegible]ीच में [illegible] [illegible]मझाया कि जिसकी [illegible] उस[illegible] [illegible]खें बंदकर पूछते हैं—'कोई आ[illegible] [illegible]क्य[illegible] आत्मा आ जाती है।' पर सवाल यह था [illegible] [illegible] जाए? अर्णव ने कहा कि दाद[illegible] को बुलाते हैं। क्योंकि मैं उनसे मिलना चाहता हूँ। अ[illegible] के भैया इस [illegible] सहम [illegible] गए। वे [illegible]रूम [illegible] दादा[illegible] [illegible] वीर [illegible]र कर [illegible] आए। मेज पर उस तस्वीर को चौ[illegible]र ब[illegible] के बीच में रखा [illegible]। मोमबत्ती उसके सामने जल रही थी। उसके चारों ओर प्लानचिट प्लेयर्स ने एक-दूसरे का हाथ थामकर बोर्ड की घेराबंदी कर दी। सभी से आँखें बंद करके दादाजी की आत्मा को बुलाने के लिए कहा गया। बाकी बच्चे मेज से दूर अपनी-अपनी कुर्सियों पर जमे थे। मेज पर जलती मोमबत्तियों को छोड़ शेष कमरे में अँधेरा था। प्लानचिट प्लेयर्स आत्मा को बुला रहे थे। कमरे में धीरे-धीरे खामोशी पसरने लगी थी। कमरे के बाहर हवाओं का शोर बढ़ने लगा था। अचानक खिड़की के पल्लों के खड़खड़ाने की आवाज

आने लगी। प्लेयर्स ने आँखें बंद की हुई थीं। उनकी हथेलियाँ एक दूसरे के साथ भींच गई थीं। आवाज बढ़ती ही जा रही थी।

"ठक...ठक [illegible]

बच्चे [illegible] नहीं जा सकता था।

[illegible] डरावनी [illegible]

"मुझे [illegible] क्या [illegible]"

[illegible] तुम [illegible] तुम्हें न [illegible] आँख बंद किए बोल रहे थे।

[illegible] घेरकर [illegible] बच्चे [illegible] से ची [illegible] या ने चुप रहने [illegible] दूसरे [illegible] ए। भयभीत बच्चे [illegible] चौकोर बोर्ड पर रखा कप हि [illegible] ठहरा था।

"दादाजी का [illegible] मोह [illegible] था।" अर्णव ने पूछा।

"हाँ।" भैया ने सहमति दी।

[illegible] इस [illegible] को 'M [illegible] अर्ण [illegible] ठा था।

"फिर इस "S" का क्या मतलब है?" भैया ने चौंककर पूछा।

"S" मतलब सीमा तो नहीं जिसने पिछले साल गोलघर के पास वाले क्वार्टर में फाँसी लगा ली थी। जिसकी आत्मा आज भी रात में गोलघर में भटकती है। भैया के दोस्त बोल उठे।

"अरे हाँ! दसवीं बोर्ड में कम मार्क्स आए थे न उसके, इसलिए।" भैया बोल उठे।

कमरे में बिलकुल सन्नाटा छा गया। हर बच्चा किसी-न-किसी का हाथ थामे हुए था। कोई भी अकेला नहीं होना चाहता था।

"इसका म[illegible] आत्मा नहीं है अर्णव!" टुटु बोल [illegible]।

[illegible]।" भैया ने कह[illegible] बच्चों की [illegible] के भैया [illegible]

[illegible] आई। रंग-बिरंगी [illegible] देखकर वे [illegible] डरावने [illegible] कर गूँजने लगे [illegible] था।

प[illegible] दरअसल उनके क्वार्टर का [illegible] आठ बज रहे थे। नाश्ता करते हुए भी [illegible] वास्तव में वे बुरी तरह परेशान थे। कुछ देर बाद मम्मी उन्हें लेने आ गईं। थोड़ी जिद और मनुहार के बाद [illegible] रास्ते पर चलने [illegible] तैयार [illegible] जो [illegible] था [illegible] टुटु-[illegible] को इस बात की संतुष्टि थी कि [illegible] रास्ते से नहीं जा रहे। ठंडी हवाएँ तीर की तरह चुभ रही थीं। वे डम के पास से बातें करते हुए गुजर रहे थे। सर्दियों की सन्नाटे भरी रात थी। सड़क पर इक्का-दुक्का लोग ही दिख रहे थे। मम्मी का हाथ थामे बच्चे चुपचाप चलते जा रहे थे। टुटु को मानो बार-बार वही आवाज सुनाई पड़ती...।

"मुझे क्यों बुलाया है?"

मम्मी के हाथ पर टुटु की पकड़ मजबूत हो गई थी। उस वक्त वह बहुत डर गया था। पर अब उसे डर नहीं लग रहा। मम्मी के साथ होने

पर वह आश्वस्त था। उसकी नजरें डैम के पानी में झिलमिलाती अनगिनत रोशनियों में उलझी हुई थीं। डैम के किनारे सड़क पर एक कतार से स्ट्रीट लाइट्स जगमगा [illegible]

"मम [illegible] डै [illegible] कै [illegible] ज [illegible] तु [illegible] ंजस में था। यह किसी [illegible] कि [illegible] था।

[illegible] ीट लाइट्स [illegible] हुए [illegible]। उनकी [illegible] हीं जँची [illegible] डैम के अंदर ही जल रहा [illegible] डैम [illegible] या गया हो [illegible] कितनी [illegible] नियाँ हैं [illegible] बल्ब भी भीग [illegible] वि [illegible]

पु [illegible] पर उसके मन में कुछ और [illegible] का अनमनापन भाँप रही थीं।

"क्या हुआ बेटा? इतनी चुप-चुप क्यों हो?"

[illegible] पु [illegible] न में सिर हिला [illegible]

"कुछ [illegible] है।" उन्होंने प्यार [illegible] उस [illegible] सिर [illegible] फेर [illegible]

"क्या परीक्षा में फस्ट आना जरूरी होता है मम्मी?"

पुट्टी की बात सुनकर मम्मी चौंकी जरूर, पर प्रकट रूप में मुस्करा कर उन्होंने कहा।

"नहीं! ऐसा बिलकुल जरूरी नहीं होता।"

"फिर सीमा दीदी...?"

अब उन्हें पूरी बात समझ में आ गई थी। उन्होंने पुट्टी को प्यार से देखते हुए कहा।

“क्या है न बेटा! अपने जीवन में बहुत सारी परीक्षाएँ देनी होती हैं। कभी पुट्टी फर्स्ट आएगी, कभी [illegible] तो कभी कोई और....हमें परीक्षाओं की बस तैयारी [illegible]।”

पुट्टी [illegible] बात समझने की कोशि[illegible]

[illegible] सुंदर दिख र[illegible] अभी [illegible] कुछ न [illegible] पाए [illegible] बात [illegible] वे समझ [illegible] रहना [illegible] प्रकाश[illegible]ना रहे।

[illegible]मिशन [illegible]घर

पु[illegible]टी स्कूल [illegible] आई [illegible] थी [illegible] भागता [illegible] पास आ ग[illegible] जठे थे। [illegible]द [illegible] खा[illegible]

[illegible]ोई [illegible] हाँफते हुए बताया।

"क्या [illegible] फे [illegible] ने जूते उतारते हुए पूछा।

"मुझे अर्णव [illegible] बताया कि कल कोई आत्मा नहीं आई थ[illegible] भैया हम सब[illegible] बुद्धू [illegible]ना [illegible] थे।"

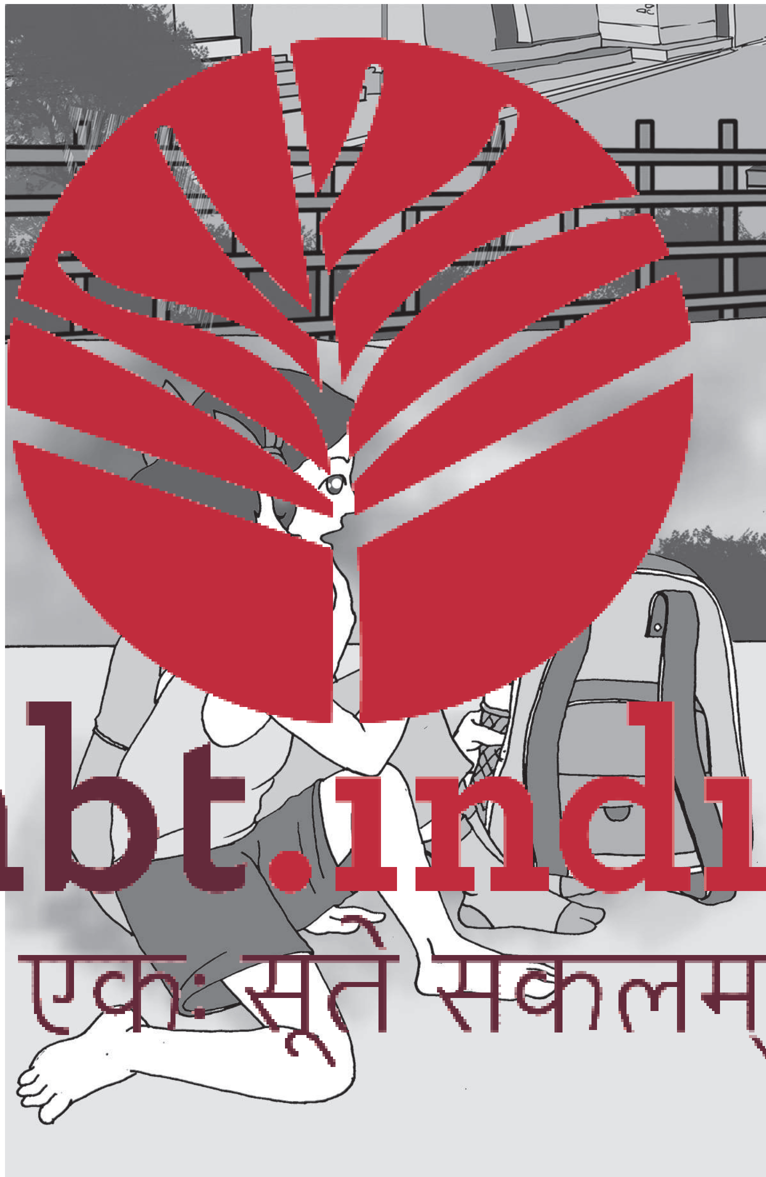
"ओ[illegible]!" [illegible]टी ने [illegible]छ स[illegible]ते हु[illegible] कहा [illegible] फिर बोली–

"चलो, आज हम लोग गोलघर के भूत का पता लगाएँगे। सर कहते हैं भूत-वूत कुछ नहीं होता।"

टुटु [illegible] पल डरा [illegible] फिर [illegible]रत से पुट्टी को [illegible] लगा।

"तुम पागल हो पुट्टी!"

वैसे पुट्टी जानती है कि टुटु को हमराज बनाना जोखिम भरा काम है। कहीं भी थोड़ा जोखिम होने या दबाव पड़ने पर वह सारे सीक्रेट्स खोल देता है। लेकिन पुट्टी जो कुछ भी सोच रही थी, वह अकेले के वश



का नहीं है। थोड़ा-बहुत डर जो है वो तो है ही। लेकिन रात में भूत का पर्दाफाश करने के ख़याल से वह इतनी रोमांचित और उत्साहित थी कि अपनी खुशी टुटु [illegible]

"क्या [illegible]" टु[illegible] मुँह खुला का खुला रह ग[illegible]

[illegible] थे...घोस्ट हं[illegible]कर... [illegible] से पुट्टी [illegible]

[illegible]। तु[illegible] को [illegible] दूँगा।" टुटु ने धमका[illegible]

[illegible] सचमुच [illegible] थी।

[illegible] वापस कर दो।"

बिजल[illegible] चेहरा उतर गया। दरअसल पुट्टी को [illegible] के [illegible] से जलने-बुझने वाले दो पेन लेकर आए थे। पूजा ने पुट्टी के जन्मदिन पर उसे एक पेन भेंट कर दिया। टुटु को वह पेन बहुत पसंद था। बहुत [illegible] उसने [illegible] की [illegible] बात मानी। बहुत सारी शैतानियों [illegible] चुग[illegible] मम्मी पापा से नहीं [illegible]की। बहुत सारी खुशामद के बाद आखिरकार पुट्टी ने वह पेन टुटु को दे दिया। टुटु पेन पाकर बहुत खुश था। आज टुटु से पुट्टी ने वह पेन माँग लिया था। अब या तो वह पेन पुट्टी को वापस करता या फिर रात को उसके साथ बाहर जाता। वैसे भी वह पुट्टी को रात में अकेले बाहर नहीं जाने देना चाहता था। आखिरकार उसने कहा—

"ठीक है। मैं भी चलूँगा।"

तय हुआ कि साहसपूर्ण काम को शनिवार की रात को अंजाम दिया जाएगा। शनिवार को टुट-पुट्टी ने कोई शैतानी नहीं की। न तो वे एक दूसरे से लड़े, न [illegible] को और धूल सने चप्पलों से उन्होंने [illegible] भी [illegible]।

[illegible] पीने के लिए उठ[illegible] से आती आ[illegible] सुन[illegible] भी [illegible] लास रखे [illegible] फिर [illegible] जाने [illegible] आखिर [illegible] में पुट्[illegible] अपने कमरे में झाँकते देख[illegible] पर [illegible] ता था। पा[illegible] अच्छे से [illegible] कर [illegible] ने पर ही सोने [illegible]

टु[illegible] के [illegible] टने के बाद ही वे अपना [illegible] लिए सबसे जरूरी चीज थी टॉर्च जिसे [illegible] में छिपा दिया था। खाना खाक[illegible] वे उस रात जल्दी ही सोने चले गए।

[illegible] की [illegible] अचानक [illegible] टी [illegible] किसी [illegible] गर्म [illegible] ई ओढ़ [illegible] थी। उसने अँधेरे में उनींदी आँखें [illegible] लक [illegible] का प्र[illegible]स कि[illegible]। पापा दोनों बच्चों का लिहाफ ठीक कर रहे थे।

"शायद पापा बाथरूम से आ गए।" पुट्टी ने मन ही मन सोचा। पुट्टी का माथा सहलाकर पापा कमरे से चले गए। पापा के जाते ही पुट्टी रजाई हटाकर फौरन उठ बैठी। उसने टॉर्च जलाकर समय देखा। साढ़े बारह बजे थे।

"टुटु-टुटु!"

टुटु कुनमुनाया, फिर मुँह फेरकर सो गया। पुट्टी को गुस्सा तो बहुत आया, पर वह कर भी क्या सकती है। उसने टुटु की रजाई सरका दी। वह ठंड से सिकुड़ ग[illegible] क[illegible]पाई—

“टुट[illegible] मि[illegible] गो[illegible] पल[illegible]।”

[illegible] क[illegible] टुटु [illegible] प[illegible] काट ली। टुटु हड़ब[illegible]—[illegible]”

“श्[illegible] टा। [illegible] उस[illegible] पर [illegible] प्यार से कहा।

[illegible] पूर[illegible] रह[illegible] च[illegible] उनके [illegible] दरवाजा [illegible] से म[illegible] था। उन्हों[illegible] कि[illegible] न से होते हुए पिछल[illegible] कला[illegible]। पु[illegible] ने [illegible] नाईट [illegible] दिया। उ[illegible] धीरे से दरवा[illegible] धा खो[illegible] मम्मी-पा[illegible] झाँका। दिन[illegible] मम्मी बेसुध सो[illegible] दिख रही थी। [illegible] के [illegible] कि वे गहरी नींद में थ[illegible] स[illegible] में ग्रिल की चाबी लटकी थी। पुट्[illegible] च[illegible] ल लाई। धीरे से ग्रिल क[illegible] ला खोलकर वे आँग[illegible] चले आए। मम्मी-पापा के [illegible] ने के भय से उन्होंने आँगन [illegible] लाइट नहीं जलाई। ग्रिल सटाकर वे टॉर्च की रोशनी में आ[illegible]। बढ़[illegible] सह[illegible] आम की डा[illegible] से क[illegible] पक्ष[illegible] तेजी [illegible] पख[illegible] फड़फ[illegible] ता उड़ा[illegible] टुट [illegible] पुट्टी का हा[illegible] कस[illegible] पक[illegible] लिय[illegible]

“अरे कुछ नहीं होगा बुद्धू। डरो मत।” पुट्टी फुसफुसाई।

रानी [illegible] पर में पिछला [illegible] था। [illegible] जब अंदर घुसे तो रानी और शीतल अपने-अपने पेट में मुँह छिपाए सो रही थीं। उनकी देह पर टाट का लिहाफ था। रानी तो पूर्ववत सोई रही। अलबत्ता बच्चों की आहट व टॉर्च की रोशनी से चौंककर शीतल ने अपना सिर उठाया। रात के इस पहर टुटु-पुट्टी को देखकर वह हैरान रह गई। वह आशंकित-सी बच्चों को देखती रही। पुट्टी डर गई...

“कहीं यह मूडी शीतल रँभाने न लगे।”

उसने कोमलता से उसकी गर्दन और देह थपथपा दी। आश्वस्त होकर शीतल [illegible] में [illegible] दोनों दरवाजा खोलकर निकले और [illegible] पिछला हिस्सा था। यहाँ [illegible] को पार करते हुए [illegible] में [illegible] रोशनी से [illegible] सड़क [illegible]।

[illegible] घर से निकलकर खुले में [illegible] पुट्टी ने टुटु [illegible] उसके [illegible] में भी उसने [illegible]

[illegible] मानो कुहरे की घनी परतों [illegible]

“ठंड लग रही [illegible] से पूछा।

“ना... ठंड कहाँ है?” टुटु ने बहादुरी से जवाब दिया।

[illegible] की [illegible] और [illegible] से [illegible] रही [illegible]। शायद वह 53 या 54 नं [illegible] स्ट्री [illegible] में [illegible]। [illegible] से [illegible] रोड आने में उसे कम-से-कम दस मिनट तो लगेंगे ही। पुट्टी ने टुटु का हाथ खींचते हुए कहा—

“चल।”

जतिन दास के मकान के बाद एक गलीनुमा सड़क थी। गली के बाद दो क्वार्टर्स का सेट है। उसके बाद खाली जमीन है। गलीनुमा सड़क का कोई नंबर नहीं था। वहाँ हमेशा अँधेरा ही रहता था... गाढ़ा अँधेरा। हालाँकि बिजली विभाग के लोग कई बार आकर वहाँ बिजली के तार

एवं बल्ब लगा गए थे। पर कुछ दिनों बाद ही जाने कैसे बल्ब फूट जाते, बिजली के तार कटे-फटे मिलते... और गली पहले की तरह अँधेरे में डूब जाती थी। दोनों [illegible] रहे थे। कभी-कभी तेज ठंडी हवा [illegible]। सन्नाटे में बस उनकी [illegible] थी। एक-दूसरे का [illegible] कर लिया। दो [illegible] के [illegible]।

रास्ते [illegible] टुटु के [illegible] डंडा [illegible] तो वह 'कूँ-कूँ' [illegible] में डूबा धुँ[illegible] दिख [illegible] था। दोनों [illegible] बढ़ने लगे। जैसे-[illegible] तरफ [illegible] सघनता कम होती [illegible] घिरा गोलघर स्पष्ट नजर [illegible] पगडंडी के रास्ते पर चलने के बाद [illegible]। स्ट्रीट लाइट दूर होने की वजह से यहाँ बहुत कम प्रकाश था। ताड़ के पेड़ों की वजह से गोलघर के पीछे [illegible]। दूर [illegible] से [illegible] रही थीं। जंगल में सियारों की हुआँ-हुआँ की आवाजें गूँज रही थीं। टॉर्च जलाकर बच्चों ने डरते-डरते गोलघर का एक पूरा चक्कर लगाया, पर अंदर देख पाने का कोई जरिया नहीं था। दरवाजे पर ताला लगा था और खिड़कियाँ बहुत ऊँची थीं। टुट्टी ने आस-पास पड़ी ईंटों को जमाकर ऊँचा कर दिया। लेकिन उस पर चढ़कर भी वे खिड़की से काफी नीचे थे। अब क्या किया जाए?

तभी टुटु की नजर सड़क के कोने में बिजली के खंभे से टिकी सीढ़ी पर पड़ी।



"पुट्टी वह देखो!" उसने पुट्टी को दिखाया।

फिर दोनों ने सीढ़ी को खंभे से हटाकर धीरे-धीरे नीचे रख दिया। सीढ़ी काफी पुर[illegible] ल[illegible]। [illegible] और आठ साल के बच्चों के लिए [illegible] दो छोर पकड़कर धीरे-ध[illegible] उन्होंने जैसे-तैसे पूरा [illegible] ने अपना म[illegible] खाल[illegible] की जेब [illegible] को [illegible] लघर की [illegible]

[illegible] मैं चढ़[illegible]

टुटु [illegible] भी ऐसी सी[illegible] नहीं थी। [illegible] बिलकुल अँधे[illegible] री। [illegible] द गई..।

[illegible] कोई तुम्हें नहीं डरा सकता।

पुट्टी ने खिड़[illegible] अंदर से भी गोल ही था। छत [illegible] एक बड़ा सीलिंग फैन टँगा था। एक कोने में 'महिल[illegible] समिति' के पोस्[illegible] रखे [illegible] दूसरी तर[illegible] [illegible] खाम[illegible] पड़े[illegible] ने बताया था कि [illegible] दिन [illegible] क्लास चलती [illegible]। हालांकि आते वक्त पुट्टी थोड़ी डरी हुई जरूर थी। पर भूतों का पर्दाफाश करने के ख़याल से रोमांचित भी थी। लेकिन यहाँ कुछ भी अलग अजीब देखने को नहीं मिला।

"क्या दिख रहा है अंदर?" टुटु नीचे से फुसफुसाया। उसकी आवाज़ में उत्सुकता और डर की स्पष्ट झलक दिख रही थी।

"कुछ नहीं, तुम खुद ही देख लो।" कहकर पुट्टी ने उतरकर टॉर्च टुटु को थमा दी।

“अंदर तो सब चुपचाप हैं। भूत तो दिखा ही नहीं।” टुटु ने उतरते हुए कहा।

टुटु-पुट्टी [illegible] वापस चलना चाहिए। तभी किसी [illegible] धीमे-धीमे रोने की भी। [illegible] की आवाज ने [illegible]

“ये [illegible] कर उसे [illegible] दिया। [illegible] के लिए [illegible] चुप [illegible] कहा।

वह [illegible] सिसकियों की [illegible] गोलघर के [illegible] का पीछा करते [illegible] कोने वाले क्वार्टर [illegible] रही थी। आगे बढ़ने पर यह [illegible] आ रही है।

“यह तो सलमा [illegible] उठा। सलमा टुटु के साथ ही [illegible] शे से स्कूल जाती है। कितनी सुंदर है सलमा, लेकिन [illegible] होमवर्क कर [illegible] ती

आस-पास [illegible] सभी क्वार्टर अँधेरे [illegible] डूबे [illegible] थे [illegible] सलमा के क्वार्टर का दरवाजा बंद था। क्वार्टर के सामने पीपल का एक पुराना पेड़ था तेज सर्द हवाओं के चलने पर पीपल की पत्तियों में सरसराहट-सी हो रही थीं। बीच-बीच में सियारों का रुदन जारी था। टुटु ने धीरे से गेट खोला। हलकी-सी आवाज हुई थी। उन्होंने बंद दरवाजे की झिर्रियों से झाँकने की कोशिश की। पर कुछ नहीं दिखा। तभी पुट्टी ने बागान की तरफ इशारा किया। वे खिड़की की ओर बढ़े। पीपल के सूखे पत्ते उनके कदमों तले कुचले जाने से चर्र-चर्र की आवाज कर रहे थे। कमरे से सिसकने की

आवाजें आ रही थीं। उन्होंने खिड़की से अंदर झाँका। कमरे में एक स्त्री बैठी रो रही थी। एक आदमी लड़खड़ाता हुआ आया और स्त्री के बाल खींचकर चिल्लाने...

"ती... सकती थी।"

... में खड़ी थीं। फ... खत्म...

"सल... किस... !" ...या।

"बहु... गु...

... डाक... भा... गा ... के पापा को जेल में डाल दूंगा... टुटु... वह गेट ... ड़ा। एक ब... उठाकर ... पूरी ताकत से ... द दरवाजे पर ...

...

"कौन...

टुटु-पुट्टी सरप... आगे... छोड़कर वे भागे चले जा रहे थे।

...क ही ... के कदमों ... सामने ... खड़ा था। उसकी गर्दन ... सी... लटकी हुई थी। एक हाथ में डंडा था। ... से ... के चेहरों पर रोशनी फेंकते हुए उसने बच्चों को पहचानने की कोशिश की। टॉर्च की रोशनी से चौंधियाई हुई आँखें टुटु-पुट्टी ने आधी बंद कर लीं।

"अरे तुम लोग तो रिवर रोड में रहता है न बच्चा लोग! इधर रात में क्या कर रहा है?"

वे दोनों हक्के-बक्के खड़े थे। उन्हें कोई जवाब नहीं सूझ रहा था। दोनों का हाथ पकड़कर बहादुर उनके क्वार्टर की तरफ चल पड़ा। टुटु-पुट्टी को लग रहा था कि बहादुर ने उन्हें सलमा के घर पर पत्थर

मारते देख लिया है। पुट्टी की जान हलक में अटकी हुई थी। अब क्या होगा? टुटु तो रोने ही लगा था। पुट्टी जानती है पापा के पूछने पर टुटु तुरंत कह देगा–"[illegible] पु[illegible] [illegible]"

इत[illegible] त[illegible] [illegible]टख[illegible] [illegible]कर पापा चौंके। कौन [illegible] है!

[illegible] खि[illegible] से [illegible]न्होंने [illegible], सामने [illegible] खड़ा था। द[illegible] खाल[illegible] [illegible] स[illegible] [illegible]जर [illegible]। वे बुरी त[illegible] चौंक[illegible] [illegible] रख[illegible] प[illegible] थीं [illegible] बच्चे-सा [illegible] लि[illegible]। बहा[illegible] पा[illegible] कि [illegible] सड़क पर दौड़त[illegible]

[illegible] तो बाक[illegible] र[illegible] बातों [illegible] मम्मी तो बहुत[illegible] [illegible]-हो-हो [illegible] रहे। उन्होंने धीरे से [illegible]–

"अगल[illegible] मि[illegible] पापा को भी अपनी टीम में शामिल कर [illegible]"

"पक्का पापा", पुट्टी अपने अच्छे पापा से लिपट गई।

[illegible]स [illegible] समझ गई [illegible] कि [illegible] कुछ [illegible]। [illegible]रे आस-पड़ोस [illegible] बु[illegible] लोग ही भूत [illegible] हैं [illegible] दूस[illegible] को सताते [illegible]।

दिसंबर की [illegible] -सी सुबह [illegible] जब [illegible] टुटु स्कूल जा[illegible] दिनों पुट्[illegible] की [illegible] द्धवार्षि[illegible] हैं। उसकी परीक्ष[illegible]। [illegible] पैर सिकोड़े बैठ गई [illegible] ने [illegible] गुनगुना पानी पी रही थी, [illegible] कर[illegible]

"काकी माँ की [illegible] बहु[illegible] है। उन्हें हॉस्पिटल में भरती किया है।"

"क्या [illegible] आ [illegible] उन्हें?" मम्मी [illegible] पूछा।

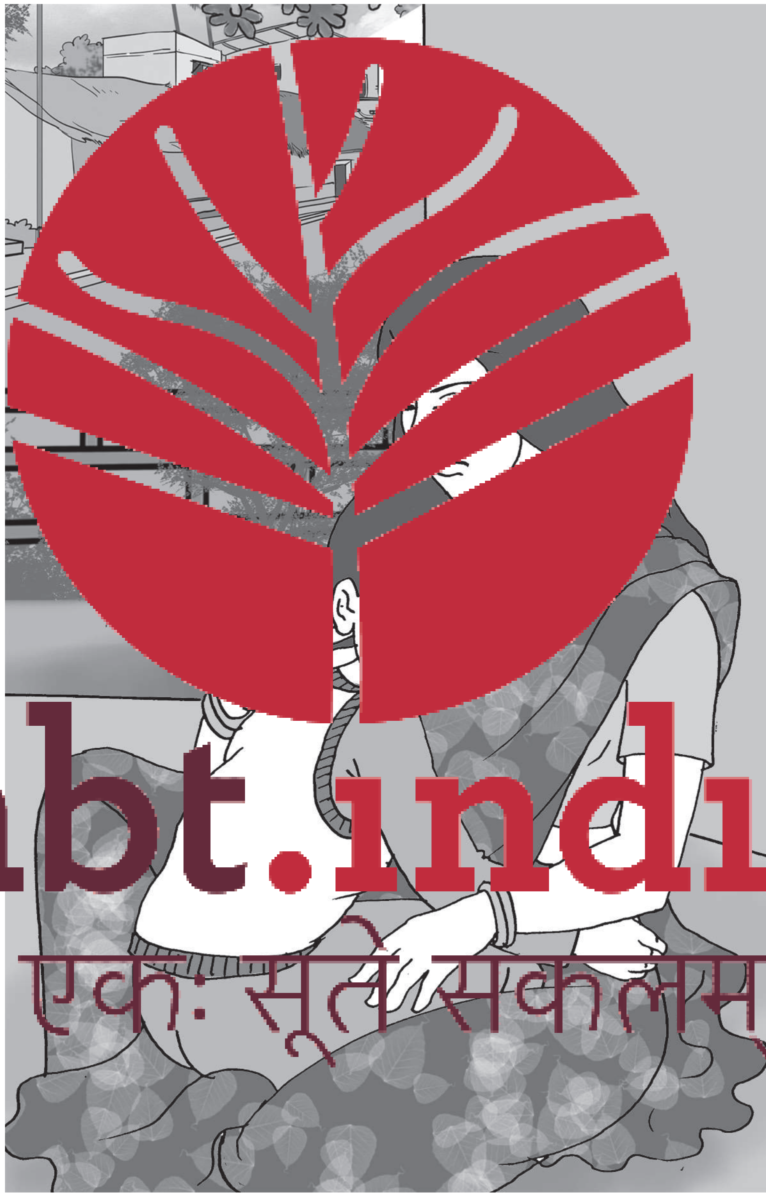
"ठंड [illegible] है।"

"मम्मी, काकी माँ ठीक हो जाएँगी न?" पुट्टी के प्रश्न पर मम्मी ने प्यार से उसका माथा सहला कर कहा...

"हाँ बेटा, बिलकुल ठीक हो जाएँगी।"

लेकिन शाम होते-होते जतिन दास के घर से रोने-धोने की आवाजें आने लगीं। अजीब मटमैली उदास शाम थी। पुट्टी को काकी माँ का झुर्रियों भरा चेहरा याद आ रहा था। हर दिन स्कूल जाते हुए जब अपने आँचल की गाँठ से पिघली-चिपचिपी मिसरी और मूँगफली के दाने वे पुट्टी





को देती थीं। तभी उसकी नजर घर के सामने इकट्ठा हुए ढेर सारे कबूतरों पर पड़ी। न वे पंख फड़फड़ाते उछल रहे थे, न गुटर-गूँ की आवाजें कर रहे थे। सड़क पर ब[illegible] आज उनकी दिलचस्पी दानों में [illegible] की माँ को विदा कहने [illegible] चली गई हैं, जहाँ [illegible] घेरने लगी थी [illegible] खिड़की [illegible] वे सब [illegible] उनसे [illegible]ट गई। उसकी आ[illegible]

बुजुर्गों की मदद

ब[illegible]त आ गया[illegible]फ [illegible]-बिरंगे [illegible]खने लगे[illegible]याएँ अब हल[illegible]ी थीं। ज्या[illegible]र [illegible]च्चे हा[illegible] में अन्य दिनों[illegible] थी[illegible]ग भी दिख रहे थे। [illegible] दू[illegible]शिश कर रहे थे कि वे कौन ल[illegible] बा[illegible]साफ करते हुए कहा।

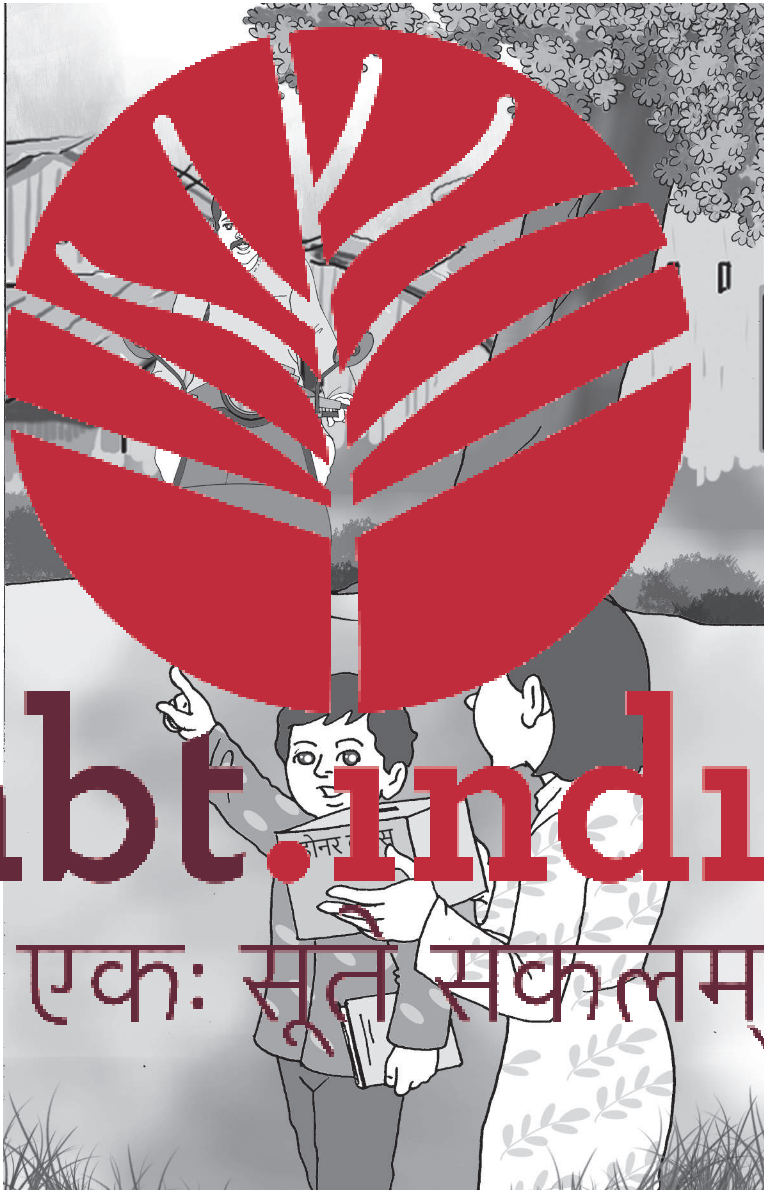
"बच्चों ये लोग [illegible] लि[illegible]करने वाली संस्था से आए हैं!"

बच्चे शांति से उनकी बात सुन रहे थे।

"[illegible]जो[illegible]द्धों का उनके घर[illegible] प्या[illegible] [illegible]रते [illegible] जा[illegible] केले [illegible]र अस[illegible]य हैं [illegible]ह [illegible]स्था उ[illegible]की म[illegible] करते है।"

अनायास ही पुट्टी को कॉफी मग में गिरा काकी माँ का वह आँसू याद आया था।

"कैसे सहायता करते हैं सर?" किसी बड़ी कक्षा के लड़के ने पूछा। पुट्टी पंजों के बल उचककर उस लड़के को देखने की कोशिश कर रही थी। पर असफल रही। इस बार हेड सर की बजाय, उनमें से एक महिला ने उत्तर दिया।



"हम उनके लिए घर, कपड़े, खाना, दवाइयाँ जैसी जरूरी चीजें उपलब्ध कराने की कोशिश करते हैं।"

फिर उन्हों[illegible] को [illegible] पा[illegible] चाहें तो संस्था के लिए चंदे इकट्[illegible] र [illegible] द [illegible] स [illegible] इच्छुक वॉलेंटियर्स को सं[illegible] डोनर [illegible] और [illegible] हस्ताक्षर लेने के [illegible] इ[illegible]

[illegible] आज [illegible] का [illegible] बेस[illegible] [illegible] पापा को [illegible] चीज [illegible] बॉक्स [illegible] र [illegible] [illegible] है [illegible] बजे पापा [illegible] है। [illegible] की [illegible] सुनके [illegible] भागते हुए गेट पर पहुँच [illegible] [illegible] को [illegible] न पहले दे[illegible] क्वाटर [illegible] की [illegible] न पर [illegible] से आते स्कू[illegible] सा[illegible] ही उन्हें दूर से आता[illegible] दिर[illegible] टी ने वह डोनर बॉक्स उनको [illegible] कह[illegible]

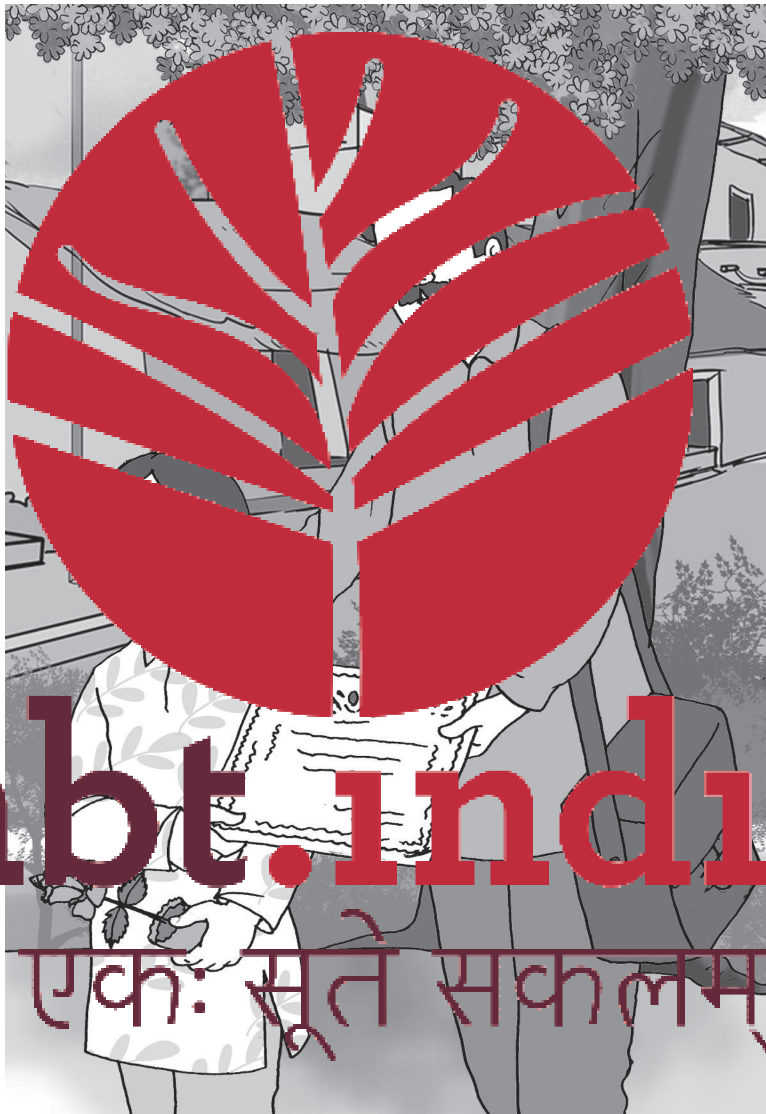
"क्या आप बुजु[illegible] दद [illegible]?"

"और... यह क्या है?" पापा शायद पूरी बात समझ नहीं पाए थे।

[illegible] बुजुर्ग[illegible] लिए स[illegible] ता [illegible] कर [illegible] पुट्टी ने जिम्मेदाराना [illegible] कहा।

पापा और मम्मी से चंदा लेने के बाद वह सोचने लगी कि अब किससे चंदा लिया जा सकता है?

बच्चों में लोगों की प्रतिक्रियाओं को समझने की अद्भुत क्षमता होती है। उदासीनता या उत्साह के प्रति वे अत्यंत संवदनशील होते हैं। अकसर लोग नन्ही लड़की के उत्साह पर हर्षमिश्रित आश्चर्य व्यक्त करते। उनके आश्चर्य पर पुट्टी का चेहरा आत्मविश्वास और खुशी से चमकने लगता। पुट्टी 'डोनर बॉक्स' खनखनाती अगले घर की ओर बढ़ जाती। कुछ लोग



बहाने बनाते या संस्था के विषय में नकारात्मक टिप्पणियाँ करते... तो पुट्टी उनके बरामदे में बँधे टॉमी को बाय करके चुपचाप बाहर निकल आती। उसकी [illegible] अपनी दुनिया में खुश थी। जहाँ [illegible] री सौंपी गई है। बुजुर्गों [illegible] सूस हुआ कि वह [illegible] नहीं रही। [illegible] रा डोनर [illegible] र डाली, [illegible]। बेशक राशि अधिक [illegible]

[illegible] है, तुम [illegible] ?" [illegible] ना उसकी नाक [illegible] पुट्टी [illegible]

[illegible] हैं [illegible] आ जाएगा। यानी कि तु [illegible] दिया है।"

मुस्कराते हुए [illegible] पड़ गए थे।

पुट्टी यह सुनकर खुश हुई। वह समझने लगी थी, कि [illegible] के लिए कुछ [illegible] (चाहे वह कितना छोटी [illegible] नहीं) [illegible] खुशी मिलती है।

संस्था की ओर से उसे सर्टिफिकेट और गुलाब का नन्हा-सा पौधा तोहफे में मिला।

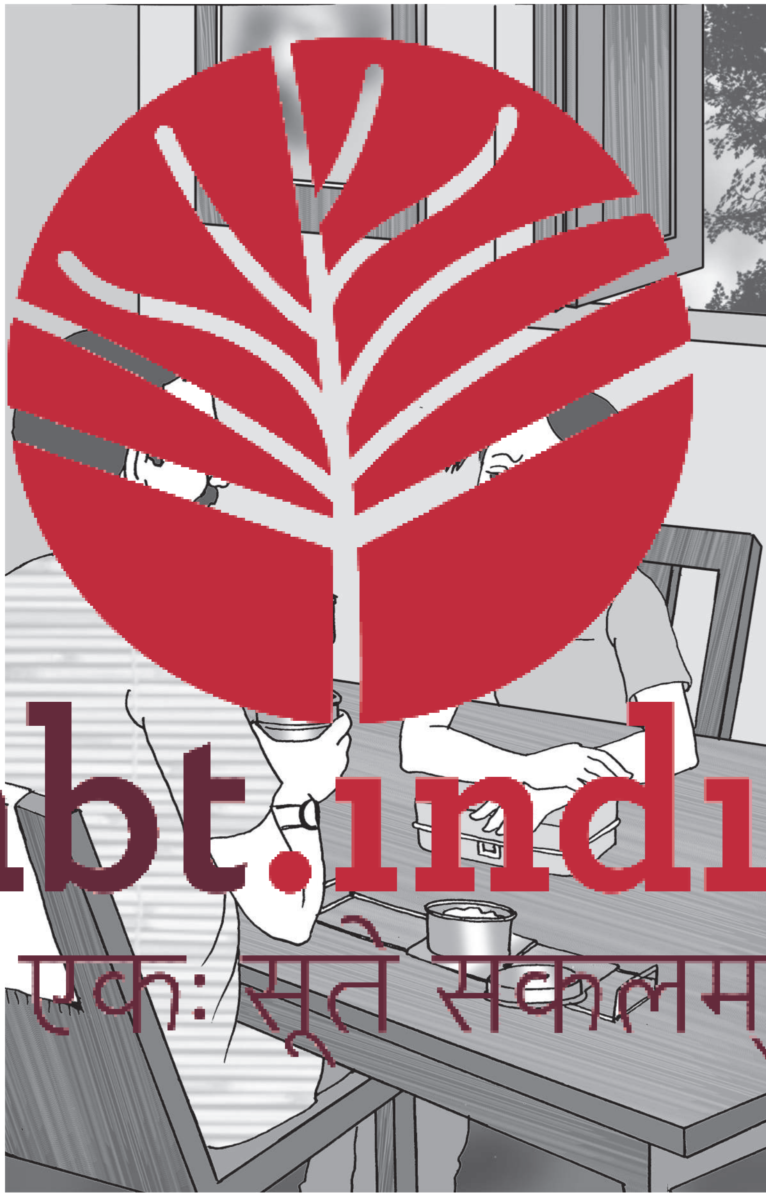
पुट्टी ने उस गुलाब को अपने आँगन के बरामदे में लगा दिया है। उसे अब इस पौधे पर खिलने वाले पहले फूल का इंतजार है।

[illegible] पर [illegible] नाली

वार्षिक परीक्षा [illegible] घोषित कर [illegible] थे। [illegible] में चली गई [illegible] मौसम शुरू हो गया था [illegible] चलतीं। मौसम [illegible] विद्यालयों में दो-ती[illegible] ली हैं। पापा ने गर्मियों की छु[illegible] में [illegible] किया है। पूरा परिवार गाँव जाएगा। इसके [illegible] ने [illegible] से छुट्टियाँ स्वीकृत करा ली थीं। ट्रेन में रिजर्वेशन भी मिल गया है। सभी बहुत खुश थे। रानी और शीतल [illegible] का जिम्मेदार पड़ोस [illegible] वाले [illegible] अंकल ने ले [illegible] है। [illegible] गाँव में घूमने के विचार [illegible] ही [illegible] जाता है। [illegible]टी भी प्रसन्न थी। लेकिन किसी बात को सोचकर उसका मन दुखी हो जाता। किसी से वह कुछ कह भी नहीं पा रही थी। आज कक्षा में कैलाश सर ने भी इस बात को महसूस किया। एक आसान से सवाल का जवाब वह नहीं दे पाई।

"क्या बात है पुट्टी? पढ़ाई में मन नहीं लग रहा?" उन्होंने बड़े प्यार से पूछा।

"नहीं सर! मन लग रहा है।" पकड़े जाने पर पुट्टी सकपका गई।



कैलाश सर ने पुट्टी को उस वक्त तो कुछ नहीं कहा, किंतु लंच में उसे स्टाफ रूम में बुलाया।

"लंच तुम … स्टाफ रूम … ठीक है न बेटा।"

"जी …!" … सि… हि…

… ट… आ… साथ लंच नहीं कर… ब… रूम … आई।

"मे आ… स…"

"यस…"

… कु… निपट… थे। … बैठने … कहा। थोड़ी देर … टिफिन … उससे … थे।

"… बताइए … परेश… है?"

… वह …

… अप… गी तो उसे दूर कैसे किया … ई … ड़ों को जरूर बताना चाहिए।"

… सर के समझाने पर पुट्टी ने उनकी तरफ देखा। सर … की तरफ ही … पुट्टी के ब… क… करते … के इंतज… के … पुट्टी ने अपनी … शानी … दी। … कुछ देर तक उसकी परेशानी सुनते रहे। फिर उन्होंने एक कागज पर कुछ लिखकर दिया और कहा कि इसे अपने पापा को दे देना। वो आज शाम को उसके घर आ रहे हैं।

पुट्टी को विश्वास नहीं हुआ कि सर के पास सचमुच उसकी समस्या का समाधान है।

स्कूल में एक महीने का ग्रीष्मावकाश घोषित कर दिया गया। पुट्टी दिन में सर की दी हुई लिस्ट से सामग्रियों के इंतजाम में लगी रही। पापा समझ नहीं पा रहे थे कि पुट्टी क्या करने वाली है?

पुट्टी शाम को सर का इंतजार कर रही थी। उसने पापा को भी बाजार जाने से रोक लिया था।

तकरीबन [illegible] आए। पापा उन्हें बैठक खाने में [illegible] थी। वह दरवाजे के पीछे [illegible] करने लगे।

[illegible] ?" सर ने [illegible]

"कल [illegible] ट्रेन [illegible]"

[illegible] थी।" [illegible]

"वो [illegible] क्या [illegible] किसी को [illegible] नहीं।" पापा [illegible] उलझन [illegible]

[illegible] कैलाश [illegible]

"[illegible] द्वारा गुलाब का पौधा [illegible]।"

"हाँ...आप [illegible] हैं,' [illegible] पापा ने सहमति जताई।

"आप तो परिवार के साथ छुट्टियों पर जा रहे हैं। [illegible] नी गायों तक [illegible] दारी [illegible] ने किसी [illegible] दी है [illegible] के गुला[illegible] का [illegible]....?"

"यह तो मैंने सोचा ही नहीं... गर्मी तो यहाँ खूब होती है। पौधा तो कुछ हफ्तों में ही सूख जाएगा..." पापा एक साँस में पूरी बात कह गए।

"बस यही समस्या उसे परेशान कर रही है," सर ने कहा।

"तो अब आप क्या करने वाले हैं... उसने आपके कहे अनुसार सारा सामान जुटा लिया है..."

"पर पुट्टी है कहाँ..." सर ने पुट्टी को याद किया।



“अभी तो यहीं थी।” पापा ने इधर-उधर देखते हुए कहा। “आप पहली बार घर आए हैं इसलिए शायद शरमा रही है।” फिर उन्होंने पुट्टी को आवाज लगा[illegible] आकर पुट्टी ने सर को नमस्ते कि[illegible]

[illegible] हूँ।” पापा ने पुट्[illegible] बाह[illegible]कर [illegible]।

[illegible] ड़ा-सा मेज लगा [illegible]। उस[illegible] गुलाब [illegible] नीचे [illegible] पानी से लबालब भर दिया। [illegible] सुतली अ[illegible] हाजिर [illegible] पर [illegible] सुतली [illegible] मीटर लंबा काट[illegible] गमले [illegible]सरे को टब में डाल[illegible]

“लो [illegible] हुए सर मुस्कराए।

“कैसे सर!” पु[illegible]।

“देखो टब मेज पर है और गमला नीचे। टब में पूरा पा[illegible] भरा हुआ है। [illegible]धीरे[illegible]कर सुतली [illegible] में ल[illegible] और [illegible]टी तक [illegible]एगा। ठीक वैसे ही जैसे छ[illegible] पर [illegible] टं[illegible] का पानी [illegible] बा[illegible]म के नल तक आता है...” पुट्टी हैरान थी। उसे बहुत समझ में नहीं आया। लेकिन पुट्टी के पापा इस बात को समझ गए। उन्होंने वही बात दोहराई जो सर बता रहे थे।

“जब तुम बड़ी कक्षाओं में चली जाओगी न, तब मैं तुम्हें इसके बारे में अच्छे से समझाऊँगा। फिलहाल तुम छुट्टियाँ अच्छे से मनाओ। यह तुम्हारे घर का माली है। यह महीने भर गुलाब को पानी देता रहेगा।” इतना कहकर सर मुस्करा दिए।

पुट्टी की समस्या हल हुई थी या नहीं, यह तो कहना मुश्किल है। पर उसे सर की बातें सही लग रही थीं। उसे सर पर पूरा विश्वास है। अगली शाम जब [illegible] ट्रेन [illegible] ने [illegible] लने वाले थे। तब पुट्टी गुलाब के [illegible] ई। [illegible] सने [illegible] ी को छुआ। वह गीली [illegible] जड़ [illegible] बाकर देखा। मि[illegible] ह [illegible] के पौधे को खु[illegible] चूम [illegible]

"अ[illegible] ब [illegible] है।"

[illegible]स्क प[illegible] ना[illegible]

सु[illegible] के धुं[illegible]रात[illegible] हुआ [illegible] क्वार्[illegible] रुका तो ए[illegible] गई। टुटु[illegible]टी [illegible]म्मी के [illegible]या सामान उता[illegible]ज[illegible] अभी रोशन थी। कु[illegible]ल[illegible] कोयल कूक रही थी... कू---कू[illegible]

जैसे ही उन लो[illegible] खे[illegible]टर में प्रवेश कि[illegible] तो उनकी आह[illegible] पाकर बाग[illegible] में बँधी रानी और शीतल रँभाने लगीं। [illegible]ट्टियों के दौरा[illegible]सद्[illegible]की [illegible]कल ने रानी [illegible] शीत[illegible] ख़[illegible] था। [illegible]र्मी की [illegible]नों में [illegible] उ[illegible] बागान की ख[illegible] हव[illegible]में बाँ[illegible] दि[illegible] करते टुटु-[illegible]टी दौड़कर रानी के पास पहुँचे। पुट्टी रानी के गले में अपनी बाँहें डाले झूल गई। [illegible] बाल [illegible] चाटती [illegible] गीली जी[illegible] गुदगुदी हो रही थी। वह हँस पड़ी। [illegible]तल [illegible] इठलाती हुई खुश दिख रही थी। मानो कह रही हो—

“कहाँ चले गए थे टुटु-पुट्टी? मैं तो बस यूँ ही झूठ-मूठ का गुस्सा करती हूँ!”



पूरा बागान और बरामदा आम व बेर की सूखी पत्तियों और धूल से भरा था। बागान में कई आम [illegible] गिरे पड़े थे। मम्मी ताला खोलकर जैसे ही अंदर आ[illegible] स्वागत किया। कई दिनों तक घर [illegible] सीधे आँगन के बराम[illegible] का ठिकाना न रहा[illegible] लगभग खत्म हो[illegible] आई थी। [illegible] था। वह [illegible] थी... [illegible]

पुट्टी [illegible] पापा सारा सा[illegible] के अंदर [illegible] उसके [illegible] लकर पूरे घर [illegible] पुट्टी [illegible]। बीच-बीच में वे ट[illegible] बहुत खुश थे। कितने दिन [illegible] के पास जो आए हैं।

“मम्मी मेरी ड्रेस साफ कर दी आपने? कल से स्कूल भी तो जाना है न!” [illegible] मम्मी [illegible] याद दिला [illegible] नहीं [illegible]

“हाँ [illegible]! तुम्हारी ड्रेस साफ करके र[illegible] हुई [illegible]!” मम्मी हँसकर बोलीं।

मम्मी खाना बनाने की तैयारी कर रही थीं। पापा थैला लेकर बाजार गए थे। सब्जियाँ भी तो लानी हैं।

इस बीच टुटु और पुट्टी नहा-धोकर तैयार हो गए। पापा ने स्टेशन पर उनके लिए बहुत सारी बाल-पत्रिकाएँ खरीद दी थीं। वे खिड़की के पास बैठे कहानियाँ पढ़ने में व्यस्त थे। टुटु अभी लंबे-लंबे वाक्य नहीं पढ़ पाता। इसलिए पापा ने उसके लिए रंगीन चित्रों वाली किताब खरीदी थी। वह ध्यान से चित्र देखता, कहानियाँ समझने व कल्पनाएँ करने में खोया

था। पुट्टी कोई विज्ञान कथा पढ़ रही थी। उसके बाद खाना खाकर वे पूरी दोपहर सोते रहे। नींद में कभी-कभी पुट्टी को ऐसा आभास होता जैसे घर ट्रेन बन गया [illegible] छुक-छुक-छुक-छुक बढ़ी जा रही है [illegible] थी। आँखें मलती वह ड्र[illegible] रहे थे। उसे देख[illegible] फर्श पर ले[illegible]

पुट्टी [illegible]

[illegible] उनींदी आवाज में [illegible]

[illegible] पापा! मुझे [illegible] स्कूल [illegible] नहीं जा[illegible]

[illegible] है। अपनी कैंटीन [illegible]

"पर [illegible] पढ़ना है!" पुट्टी ने ठुनकते हुए फैसला सु[illegible]

पापा चिंतित से मम्मी को देखने लगे। मम्मी ने उसे मनाने की कोशि[illegible] हुए [illegible]...।

"पता [illegible] पु[illegible], बच्चे बस [illegible] स्कूल [illegible] वह तरह-त[illegible] के [illegible] होते हैं... वीडियो गेम्स भी है। इमली का एक बड़ा पेड़ है वहाँ।"

पुट्टी परेशान-सी मम्मी-पापा को देखने लगी। वह उलझ गई थी। "आखिर मम्मी-पापा उसे दूसरे स्कूल में क्यों भेजना चाहते हैं? कितना प्यारा तो है उसका स्कूल?"

दोपहर ढल चुकी थी। चहचहाते हुए पक्षी अपने-अपने नीड़ में वापस लौट रहे थे। सहसा पापा ने पुट्टी का हाथ पकड़कर कहा—"घूमने चलोगी बेटा?"



घूमने का नाम सुनकर पुट्टी मुस्करा उठी। आसमान साफ था। शाम की लालिमा छाने लगी थी। वे दोनों एक दूसरे का हाथ थामे सीधी सड़क पर नदी [illegible] ड़े [illegible] दोनों ओर अमलतास के पेड़ थे। [illegible] प [illegible] हवा में धीमे-धीमे झूम र [illegible]

[illegible] या [illegible] र [illegible] बदल [illegible]

"मतल [illegible]

"मत [illegible] ने यह [illegible] मी [illegible]

[illegible] जमान [illegible] ली पड़ [illegible] ल [illegible] खाते [illegible] कहा—

"बहु [illegible] ने यह [illegible] जं [illegible] ल [illegible] थे। [illegible] पहाड़िया लो [illegible] करते थे। [illegible] पहाड़िया लोगों [illegible] संथालों ने खेती [illegible] बाद [illegible] आदिवासियों के घर [illegible] दि [illegible] धीरे-धीरे यहाँ कारखाना ब [illegible] फि [illegible] कूल बने।"

पुट्टी पापा क [illegible] न [illegible] या।

"उसके बाद लोग यहाँ रहने लगे। वही लोग कभी-कभी... [illegible] रूरत पड़ने पर [illegible] या [illegible] हुई' जगह [illegible] तो [illegible] या [illegible] ज [illegible] ले जान [illegible] पड़ता [illegible]। क [illegible] ते हैं इससे ची [illegible] बेहत [illegible] होंगी [illegible] उन [illegible] विक [illegible] होगा [illegible]'"

कहते हुए अचानक पापा चुप हो गए थे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे अपनी बात पुट्टी को कैसे समझाएँ। फिर उन्होंने पुट्टी से एक कल्पना करने को कहा...।

"अच्छा! यह बताओ हमारे कारखाने में कैसे इंजन बनते हैं?"

"बहुत सुंदर और मजबूत पापा।" पुट्टी की आँखों के सामने विश्वकर्मा पूजा के दिन कारखाने में तैयार हो रहा बिजली का नया इंजन घूम गया।

“अब यह मान लो कि तुम्हारे स्कूल की जगह लंबी रेल लाइन बिछ जाए। वहाँ वही बिजली का इंजन उन पटरियों पर दौड़े... तो कैसा रहेगा?”

“फिर स्कू ... ए ... पा ... पापा की बातों से आज बहुत हैरा ...

... रे ... कहीं ... ख ... ेगा?”

... थ ... ड़ ... अजी ... रों से उन्हें दे ... लगा। ... कुछ-क ... झ ... वह ... आँ याद ... । ... अप ... न ... खिड़की ... वह ... स्कूल ... कैला ... सर का सुंदर-सा ... रंग-... गे ... फूल ... थ। ... अनुपम, कु ... अनवर... ... अब ...

... ौरभ ने ... उकेरा था। अमूमन ... डेस्क ... के नाम लिखे थे। उन डेस्क ... ोग ... तोड़ दी गई होंगी?

वह उदास-सा ... ी... ... सहसा उसने रुँधे गले से कहा ...

... ी के ... न के लि ... स्कूल ... कित ... ात ... न पापा ...”

“सचमुच, बहुत बुरी बात है!” पुट्टा के सामने घुटनों पर बैठकर पापा ने कहा।

नूतन ग्राफिक्स, साहिबाबाद, गाजियाबाद (उ. प्र.) द्वारा शब्द संयोजन तथा
इंडिया ऑफसेट प्रेस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

उपासना (1984) हिंदी में एम.ए और एम.एड. हैं। उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ का नवलेखन पुरस्कार-2014 मिल [illegible] कु [illegible] ों [illegible] ें बच्चों को पढ़ाती रही हैं। वे हिंदी की कई [illegible] ि [illegible] नय [illegible] कर [illegible] ैं।

मित्रारूण [illegible] ने [illegible] की [illegible] श [illegible] ग [illegible] ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट [illegible] उ [illegible] नपीओ [illegible] इदेश [illegible] विश्वविद्यालय के लिए कई [illegible] ए [illegible] सप [illegible] यि [illegible] त्रस, [illegible] न्यास आदि प्र [illegible] ों क [illegible] का [illegible] त्रांक [illegible]